वर्ष-1, अंक-12, दिसंबर 2022

अमृत भूमि

MPHIN37435 मूल्य-60/-

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

मध्यप्रदेश पेसा नियम

जनजातीय समुदाय को जल, जंगल, जमीन, मजदूरों, महिलाओं व संस्कृति संरक्षण के मिले अधिकार

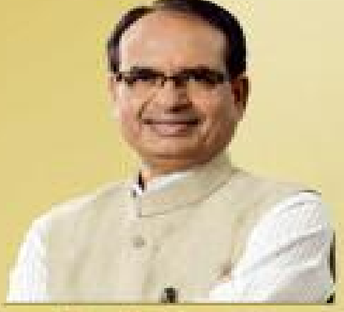

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश सरकार ने दिये आर्थिक उन्नति के साथ सांस्कृतिक संरक्षण के अधिकार

अनुसूचित क्षेत्र के 89 विकासखंडों में हुए लागू

सामाजिक समरसता के साथ जनजातीय वर्ग को मिले उनके अधिकार

जमीन के अधिकार

- गांव की जमीन और वन क्षेत्र के नक्शे, खसरा बी-1 पटवारी और बीटगार्ड कराएंगे उपलब्ध, नहीं लगाने होंगे तहसील के चक्कर
- राजस्व अभिलेखों की त्रुटियों के सुधार की अनुशंसा का अधिकार
- भू-अर्जन, खनिज सर्वे, पट्टा और नीलामी हेतु ग्राम सभा की सहमति और अनुशंसा
- गलत तरीके से जमीन खरीदने/कब्जा करने पर ग्राम सभा का हस्तक्षेप, नहीं कर सकेगा कोई छल-कपट
- ग्राम सभा वापस दिलवा सकती है कब्जे वाली जमीन

जंगल के अधिकार

- लघु वनोपजों एवं तेंदूपत्ता के संग्रहण और विपणन का अधिकार, अब जनजातीय समुदाय तय करेगा अपनी लघु वनोपजों का मूल्य, मिलेगी उचित कीमत
- एक निश्चित दर से कम रेट पर नहीं बिकेगी वनोपज

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने पेसा जागरूकता अभियान की शुरुआत की

वक्र तुंड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभ:। निर्विघ्नं कुरु मे देव शुभ कार्येषु सर्वदा॥

'किसी को अपने सपने चुराने न दें। यह आपके अपने सपने हैं, न कि किसी ओर के।'

अमृत भूमि

वर्ष-1, अंक 12, भोपाल, दिसंबर 2022

मार्गदर्शक
पं. रामस्वरूप समाधिया
श्री धनेश चतुर्वेदी
श्री राकेश त्यागी (दिल्ली)

प्रधान संपादक एवं प्रकाशक
अतुल समाधिया
9827318384
arpitasharma2233@gmail.com

सहयोगी संपादक
डॉ. पुरुषोत्तम शर्मा
श्री आर.एस. भदौरिया

संपादक (स्वास्थ्य)
मनोज चतुर्वेदी

अतिथि संपादक
श्री आलोक नाथ, श्री विनीत दुबे
श्रीमती स्मृति आदित्य पाण्डे (इंदौर)

पंजीकृत कार्यालय
ए-5/102, ब्ल्यू स्काई हाईराइज आकृति ईको सिटी, बावड़ियाकलां, भोपाल
462039, मध्यप्रदेश, भारत

संचालन कार्यालय
एफ-137, फ्लेमिंगो, आकृति ईको सिटी, बावड़ियाकलां, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

आवरण एवं साज सज्जा
वेबथिंक टेक्नोलॉजी, भोपाल (7000297982)

मुद्रक
विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
एफ-45, औद्योगिक क्षेत्र, गोवंदपुरा, भोपाल
फोन-0755- 2401952, 9425005624
vikasoffsetbhopal@gmail.com

साभार- पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्रों का स्रोत गूगल है।

पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख लेखक के स्वतंत्र विचार हैं, इसमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। विवादों में पड़ना हमारा अभिप्राय नहीं, परंतु विवाद होने पर न्यायक्षेत्र भोपाल ही होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं प्रधान संपादक श्री अतुल समाधिया द्वारा विकास ऑफसेट, 45 सेक्टर-एफ, इंडस्ट्रियल एरिया, गोविंदपुरा, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं ए-5/102, ब्ल्यू स्काई हाईराइज आकृति ईकोसिटी, बावड़ियाकलां, भोपाल से प्रकाशित।

संपादकीय 3
विधानसभा चुनाव 2023 9 राज्यों की बारी, शुरू करो तैयारी 5
केजरीवाल को भारी पड़ी मुफ्त की घोषणाएं 6
एनडीटीवी अस्त हो गया 10
ईमानदारी का कड़वा फल 11

बड़ी मछलियों पर हाथ डालना भारी पड़ा... आईपीएस मकवाना को

छह माह में ही कर दिया गया तबादला

एसपी रहते आईएएस बेटे को कर चुके हैं गिरफ्तार

कमलेश्वर का 'अंतिम सफर' 16
लोकसभा में विपक्ष के नेता भूमिका और प्रासंगिकता 18
संसद में अनुशासन और मर्यादा 19
अब तो और कठिन डगर है, कांग्रेस के लिये मध्यप्रदेश जीतना 20

दुनियाभर में फेमस है महाराष्ट्र के ये पर्यटक स्थल 23
भविष्यफल 32

राज्य स्तरीय ब्यूरो की आवश्यकता है

'अमृत भूमि' पत्रिका को मध्य प्रदेश, दिल्ली, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, बिहार, हरियाणा एवं पंजाब में राज्य स्तर पर ब्यूरो नियुक्त करना है, जो कि पत्रकारिता के साथ व्यवसायिक गतिविधियों को संचालित करने के लिए भी अधिकृत होंगे.
संपर्क- 9827318384 amritbhumibhopal@gmail.com

अमृत भूमि

'अमृत भूमि' सजग है, जागरूक है और कटिबद्ध है भारत का गौरव बढ़ाने के लिए। विश्व की श्रेष्ठतम भारतीय संस्कृति को निरन्तर पुष्टि देने के लिए राष्ट्रीय विचार-यज्ञ में अपनी आहुति देता चला आ रहा है।

राष्ट्र की प्राण-वायु को पुष्ट करने के लिए संकल्पित 'अमृत भूमि' की इस लोक कल्याणकारी यात्रा को आगे बढ़ाने में आप भी सहभागी बनें।

मासिक सदस्यता	60/-
वार्षिक	700/-
द्विवार्षिक	1400/-
आजीवन सदस्यता	50,000/-

सभी सहभागियों को 'अमृत भूमि' नियमित प्रेषित किया जाएगा एवं उनके किसी विशेष अवसर पर शुभकामना संदेश भी प्रकाशित किया जाएगा। द्विवार्षिक सदस्यता (1000/-) देकर प्राप्त की जा सकती है।

सहभागिता/सदस्यता पत्र

नाम .... जन्म तिथि ....

पता ....

....

मोबाइल .... ई-मेल ....

विवाह वर्षगांठ .... व्यवसाय ....

सहभागिता/सदस्यता राशि .... चेक/ड्राफ्ट संख्या ....

स्थान .... दिनांक .... हस्ताक्षर ....

सहभागिता/सदस्यता राशि के सभी ड्राफ्ट/चेक 'अमृत भूमि' के नाम से निम्नलिखित पते पर पूर्ण विवरण के साथ प्रेषित करने की कृपा करें। राशि आप सीधे हमारे मोबाइल नंबर 9827318384 पर Gpay या Phonepe कर भी कर सकते हैं।

पता

ए-5/102, ब्ल्यू स्काई हाईराइज आकृति ईकोसिटी, बावड़ियाकलां, भोपाल

फोन : 9827318384 ई-मेल amritbhumibhopal@gmail.com

एक सवाल

अतुल समाधिया
संपादक
atulsamadhiya@rediffmail.com
Mob: 9827318384

आलोचना को स्वीकार करना, और उसे विचार की शक्ति से मिटा देना ही विद्वान की शक्ति है। विद्वान तलवार नही भांजते। वे असहमति का सम्मान करते हैं। कुतर्क का भी। क्योंकि तर्क हो या कुतर्क, विजय सत्य की ही होती है।

एक बड़ा सवाल है ? जिस पर चर्चा होनी चाहिए । सवाल ये है, कि किसका काम किसको करना चाहिए?

आप सोचेंगे कि ये भी भला कोई सवाल हुआ ! जिसका काम है, उसी को करना चाहिए । लेकिन उत्तर इतना भी आसान नही है ।

बताइये प्लम्बर का काम इलेक्ट्रिशियन करने लगे, इलेक्ट्रिशियन का काम नाई ओर नाई का काम मोची, तो क्या होगा । बेड़ा गर्क ही होगा ।

लेकिन लोकतंत्र की यह विडंबना ही है, की आप किसी को कोई काम करने से रोक नही सकते । मरीज का इलाज करने के लिए आपको डॉक्टर होना ?रूरी है । पर आप मोची हों, नाई हों या कार के मेकेनिक, आप इलाज भले न कर सकते हों पर आप अस्पताल ?रूर खोल सकते हैं । डॉक्टर को उसकी मर्जी की तनख्वाह देकर उससे मरीज का अपनी मर्जी से इलाज करवाने के लिए, गरिये सकते हैं । आप ऐसा कर सकते हैं, यदि आपके पास पूंजी है ।

एक डॉक्टर का इलाज गलत हो सकता है, यदि मर्ज को समझते समय उसका आंकलन गलत हो जाये । परन्तु, उसका मरीज के प्रति इंटेंशन गलत नही हो सकता । लेकिन यदि इंटेंशन ही खरीद लिया जाए, तो मरी? तो मरेगा ही, हुनर की आत्मा भी साथ मे ही दिवंगत हो जाएगी ।

पिछले दिनों जब NDTV के बिकने की खबर आई तो लगा कि पत्रकारिता की आत्मा बिक गई हो ।

भला अडानी का पत्रकारिता से क्या लेना देना ।

एक शिक्षक स्कूल चलाये, एक डॉक्टर अस्पताल चलाये, एक पत्रकार अखबार या चैनल चलाये तो वह सेवा का माध्यम बनती है, पर यदि कोई पूंजीवाद के प्रभाव से इन सेवाओं का संचालन करे तो वह सेवा सिर्फ व्यापार बन कर रह जायेगी ।

सेवा में बसी आत्मा, निरंकुश पूंजी के हाथों मर जाएगी।

अडानी का विश्व क्षितिज पर चमकना हर भारतीय के लिए गौरव की बात है । हिन्दू होना गौरव की बात है । हिंदुत्व की बात होना गौरव की बात है । परंतु यह देश ओर सनातन धर्म दोनो, अनेकता में एकता को जीने के लिए जाने जाते हैं । तर्क का विरोध तर्क से होना चाहिए । आलोचना को तर्क से मार दिया जाए वह विचार की शक्ति है । परन्तु आलोचक को ही खत्म कर देना, तलवार की शक्ति है । विचार, ज्ञान और बुद्धि की मृत्यु है ।

परस्पर असहमत होने के विचार से सहमत होना ही लोकतंत्र है ।

आलोचना को स्वीकार करना, और उसे विचार की शक्ति से मिटा देना ही विद्वान की शक्ति है । विद्वान तलवार नही भांजते । वे असहमति का सम्मान करते हैं । कुतर्क का भी। क्योंकि तर्क हो या कुतर्क, विजय सत्य की ही होती है ।

सरस्वती और लक्ष्मी को साथ मे विराजित कर पूजा जाता है । उन्हें प्रतिस्पर्धा का मानक नही बनाया जाता ।

विचार प्रवाह तो पक्षी की उड़ान के समान होना चाहिए । स्वतन्त्र, उन्मुक्त, अनंत ।

राष्ट्र के नव निर्माण करने और विश्वगुरु बनने के लिए, सेवा को पूंजीपति पलकों की नही, बल्कि पूंजी से पालन की ?रूरत है ।

पत्रकारिता राष्ट्र का चौथा स्तंभ है । उसकी नींव नही हिलना चाहिए ।

सत्यमेव जयते

जय हिन्द

विधानसभा चुनाव 2023
9 राज्यों की बारी, शुरू करो तैयारी

वैश्विक स्तरपर भारत का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध लोकतंत्र सारी दुनिया के लिए एक रोल मॉडल है, जिससे प्रेरित होकर अनेकदेश इसका मार्गदर्शन प्रेरणा लेने की राह पर चल पड़े हैं। पिछले दिनों हमने मीडिया में देखे कि कैसे भारतीय चुनाव आयोग की कुछ वैश्विक मंचों पर प्रतिष्ठा बढ़ी है जो तारीफ़ के काबिल है। चूंकि अब वर्ष 2022 के अंतिम दौर पर 2 राज्यों और एमसीडी का चुनाव समाप्त होकर रिजल्ट आ गया है।याने गुजरात, हिमाचल में विधानसभा चुनाव पूरे हो चुके हैं। गुजरात में जहां उस पार्टी की फिर सत्ता में वापसी लौटी है, वहीं हिमाचल से सरकार की विदाई हो गई है। पहाड़ी राज्य में दूसरी सत्ता की कुर्सीसंभालेगी। इसी के साथ साल 2022 का चुनावी मौसम भी खत्म हो गया है। अब देश में अगले साल यानी 2023 में 9 राज्यों में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं जो उम्मीद है 2024 के आम लोकसभा चुनाव के सेमीफाइनल की तर्ज पर पार्टियों को देखने की जरूरत को रेखांकित किया जा रहा है। हालांकि आजकल राजनीतिक पार्टियां भी कारपोरेट फार्मूले का पालन कर रणनीतिक रोडमैप बनाकर अपने विज़न तय करती है और मिशन 2023 पर उनके द्वारा बनाए गए प्रकोष्ठ के द्वारा काम करना बहुत पहले ही शुरू कर दिया होगा। परंतु चूंकि अभी दो बड़े राज्यों के रिज़ल्ट 8 दिसंबर 2022 को संपन्न हो गए अब सभी पार्टियों का ध्यान अपने मिशन 2023 पर पूरी ताकत से लगेगा, जो सही भी है, क्योंकि किसी राज्य का चुनाव जीतना या सम्मानजनक स्थिति पाना कोई कुछ दिनों का काम नहीं है बल्कि अपने मिशन को जीतने पर कार्य करते हुए महीनों और सालों लग जाते हैं। इसलिए मीडिया में आई जानकारी के सहयोग से हम इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, 2023 में 9 राज्यों की बारी-शुरू कर दो तैयारी।

साथियों बात अगर हम आने वाले वर्ष 2023 में 9 राज्यों के चुनाव की करें तो मेघालय और नागालैंड का चुनाव फ़रवरी 2023 में होने की संभावना है। इनमें मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, तेलंगाना, त्रिपुरा, मेघालय, नागालैंड और मिजोरम शामिल है। इन राज्यों में पार्टियों की जीत हार से आगामी 2024 लोकसभा चुनाव को लेकर जनता के मूड का पता चलेगा। हालांकि विधानसभा चुनावों के नतीजों से लोकसभा चुनाव पर असर पड़े ये कोई जरुरी नहीं है। कर्नाटक में भी अगले साल यानी 2023 में चुनावी रण है। मौजूदा समय में यहां बीजेपी की सरकार है। बसवराज बोम्मई प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं।कर्नाटक विधानसभा का कार्यकाल मई 2023 में खत्म होने जा रहा है और उससे पहले चुनाव कराए जाने की संभावना है। छत्तीसगढ़ में भी अगले साल यानी 2023 में विधानसभा के चुनाव होने हैं। मौजूद वक्त में यहां अभी कांग्रेस की सरकार है। यहां भूपेश बघेल मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाल रहे हैं. छत्तीसगढ़ में विधानसभा की कुल 90 सीटें हैं। छत्तीसगढ़ विधानसभा का कार्यकाल नवंबर 2023 में खत्म हो रहा है. यहां नवंबर से पहले चुनाव होने की संभावना है। मध्य प्रदेश में बीजेपी की सरकार है। मौजूद वक्त में यहां शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री हैं। विधानसभा की यहां 230 सीटें हैं. अगले साल नवंबर 2023 में यहां विधानसभा का कार्यकाल खत्म हो रहा है।यहां नवंबर से पहले चुनाव कराए जाने की संभावना है। सभी पार्टियां अपनी-अपनी तैयारियों में जुट गई है। राजस्थान में भी विधानसभा चुनाव साल 2023 में होने हैं। यहां फिलहाल कांग्रेस की सरकार है और अशोक गहलोत प्रदेश के मुख्यमंत्री

हैं। राजस्थान विधानसभा में 200 सीटें हैं। राजस्थान विधानसभा का कार्यकाल दिसंबर 2023 में खत्म होने जा रहा है। यानें दिसंबर 2023 से पहले यहां चुनाव कराए जा सकते। इन 9 राज्यों के चुनाव सभी पार्टियों के लिए अहम होंगे क्यों कि इन राज्यों में पार्टियों की जीत या हार से आगामी 2024 लोकसभा चुनाव को लेकर जनता के मूड का पता चलेगा। इन चुनावों से पार्टियों को राज्यों में अपनी मजबूती का पता चलेगा जिसके आधार पर पार्टियां लोकसभा के लिए रणनीति तैयार करेंगी।

साथियों मध्य प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, छत्तीसगढ़ में दो पार्टियों के बीच कड़ा मुकाबला देखने को मिल सकता है। एमपी और कर्नटक में जहां बीजेपी की सरकार है वहीं राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस सत्ता में है। इन राज्यों में अभी से चुनावी सरगर्मी देखने को मिल रही है।

साथियों बातअगर हमराजनीतिक पार्टियों द्वारा समय के बदलते परिवेश में अब कारपोरेट फार्मूले अपनाकर रणनीतिक नीतियां रणनीतियां और फार्मूले बनाकर अपनाने के अनुमान की करें तो, सीखना और न सीखना कॉर्पोरेट जगत का नया मानदंड हो सकता है, लेकिन राजनीतिक पार्टियां अब इस कॉर्पोरेट फॉमूर्ले का पालन कर रही है ताकि राज्यों में बदलाव की नई लहरें ला सकें और 2023 में विधानसभा चुनावों में जीतनें का मार्ग प्रशस्त कर सकें। हालांकि चुनाव अभी दूर हैं, लेकिन सबने इसके लिए रणनीति बनाना शुरू कर दिया है।

साथियों हमने कुछ राज्यों को जमीनी स्तर पर अपने आधार को मजबूत करने के लिए अलग तरह से काम करते देखा है और इसलिए सब एक दूसरे के मॉडल का अध्ययन कर रहे हैं और वक्त पड़ने पर वे भी उनका पालन करेंगे। उदाहरण के लिए, कुछ राज्यों ने केंद्र सरकार की योजनाओं को लोकप्रिय बनाने के लिए जमीनी स्तरपर अच्छा काम किया है। इसी तरह, कुछ ने अपनी बूथ समितियों को मजबूत करके अलग तरह से काम किया है इसके अलावा, कुछ राज्यों ने डॉक्टरों, वकीलों आदि सहित विभिन्न प्रकोष्ठों को मजबूत करके नवाचार के साथ काम किया। हजारों की संख्या में पेशेवरों की अलग-अलग टीमों का गठन किया गया है, जिन्होंने जमीनी स्तर पर पार्टी को मजबूत किया है।

साथियों पिछले कुछ महीनों से, पार्टियां पहले से ही बने मॉडल पर काम कर रहे हैं, जो गुजरात में सफल साबित हुआ है। इस मॉडल के तहत, कार्यकर्ता एक मजबूत आधार बनाने के लिए एक विशेष ब्लॉक के प्रत्येक परिवार के साथ जुड़ रहे हैं। उन्होंने कहा, यह मॉडल एक पार्टी के निर्माण खंड की तरह काम करता है। गुजरात में, अक्सर पार्टीयां कुछ मॉडल के सौजन्य से चुनाव जीतती रही है, जिसकी छाप अबभी दिखाई पड़ रही है। अक्सर हर पार्टी के वैकल्पिक रूप से चुनाव जीतने के दशकों पुराने मॉडल को अब समाप्त होते देखना चाहते हैं।

साथियों बात अगर हम कुछ रणनीतिक संगठनात्मक मजबूती और जनता के दिलों को भांपकर, उनके अनुसार काम किया जाए तो जनता जनार्दन उम्मीद से अधिक अपना अपार जनसमर्थन देकर उस पार्टी को खुशियों की सौगात देती है, तो किसी के भविष्य बनाने और आगे की राह आसान करने की सौगात देती है। जैसे गुजरात में बीजेपी लगातार सातवीं बार सरकार बनाकर एक और इतिहास रचने जा रही है। सूबे में बीजेपी अपने अबतक के तमाम रिकॉर्ड को तोड़ते हुए प्रबल बहुमत हासिल करने जा रही है। यहां दूसरी पार्टियों का अच्छा हाल नहीं हुआ है। जनता ने इस जीत का इतिहास रचने वाली पार्टी को ऐसी सौगात दी है कि पिछले रिकार्डो के रिकॉर्ड भी तोड़ दिए हैं और इतिहास का भी इतिहास बनाकर इस पार्टी को जीत का मुकुट पहना दिया है। इस पार्टी नें पहले 127 सीटों और दूसरी पार्टी का चुनाव में 149 सीटों का रिकॉर्ड अभी-अभी तोड़कर इस पार्टी को 156 सीटों नें रिकॉर्ड बनाकर ताज पहना है। पश्चिम बंगाल के लेफ्ट के शासन के 32 साल का रिकॉर्ड भी अब टूट जाएगा क्योंकि 27 वर्षों से यह पार्टी शासन चला रही है अब 32 साल में आ जाएगा। वही एक पार्टी को हारकर भी जीत मिली हुई महसूस होती है, क्योंकि उनकी पार्टी अब नेशनल पार्टी बन गई है पहले 1 फ़ीसदी से भी कम वोट प्रतिशत था। अब 12 फ़ीसदी से भी बढ़ गया है। सीटें ज़ीरो से 5 आ गई है और 35 सीटों पर दूसरे नंबर पर रही है, जिसमें उन्हें प्रोत्साहन मिला है और उनकी डेरिंग बढ़ गई है। ठीक उसी तरह, पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश में जनता ने अपना रिवाज कायम रखा और सत्ता परिवर्तन को चुना। यहां कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत हासिल हुए है। हिमाचल की जीत कांग्रेस के लिए गुजरात की हार पर मरहम का काम करेगी।

अत: अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 9 राज्यों में विधानसभा चुनाव 2023 होंगे। 2023 में 9 राज्यों की बारी - शुरू कर दो तैयारी। मिशन 2024 के पहले 9 राज्यों के विधानसभा चुनावसेमीफाइनल की तर्ज पर पार्टियों को अपने संगठन शासन और जनसंपर्क को मज़बूत करना समय की मांग है।

केजरीवाल को भारी पड़ी मुफ्त की घोषणाएं

मुफ्त की घोषणाओं से पंजाब में केजरीवाल ने सरकार तो बना ली परन्तु वे यह भूल गए कि पंजाब का फेक्टर सब राज्यों में लागू नहीं हो सकता। केजरीवाल ने गुजरात में भाजपा की चुनावी लहर को झूठ साबित करने में अफनी ओर से कोई खसर नहीं छोड़ी। यहां तक कि केजरीवाल ने अपने तीन प्रत्याशियों कि जीत कि लिखित में चिठ्ठी तक लिख दी कि ये तो जीत ही रहें हैं ओर पूरे राज्य में आम आदमी पार्टी भी गुजरात में सरकार बना रही है। इतनी बड़ी मूर्खता तो केवल केजरीवाल ही कर सकतें हैं। बड़बोलेपन वाले नेताओं को केजरीवाल से जरूर सीखना चाहिए।इस देश में सत्ता कि सबसे बड़ी भूख यदि किसी पार्टी को है तो वह आम आदमी पार्टी को है। एकाएक देश का प्रधानमंत्री बनने का ख्वाब

एमसीडी चुनाव में आप की बड़ी जीत ने दिया उसकी राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा

एमसीडी के नतीजों ने राज्यों पर शासन करने वाले क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की उम्मीदें बहुत बढ़ा दी हैं, क्योंकि इसने एक सबूत दिया है कि भाजपा और मोदी-शाह की जोड़ी को दिल्ली की तरह हार के साथ सत्ता से बाहर किया जा सकता है। कांग्रेस के पास यह सीखने का भी एक सबक है कि उन्हें न केवल राज्यों में अपने समर्थन आधार की रक्षा करने की जरूरत है बल्कि अपने अस्तित्व के खतरे को दूर करने के लिए अच्छा प्रदर्शन करने की भी जरूरत है।

दिल्ली नगर निगम के चुनाव परिणामों ने उभरते हुए राजनीतिक सितार- अरविंद केजरीवाल के कद को और चमका दिया है, जिसने न केवल भाजपा को हतोत्साहित किया है, बल्कि इसकी राष्ट्रीय संभावनाओं को भी प्रभावित किया है, जिसके कारण 2024 के लोकसभा चुनावों से पहले कुछ राजनीतिक मंथन हो सकता है।

अपराजेय माने जाने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नाक के नीचे भाजपा की हार और बेचैनी महत्वपूर्ण है, खासकर तब जब पार्टी ने राष्ट्रीय राजधानी के नगर निगमों में 2007 से सत्ता में रही भाजपा का बचाव करने के लिए 7 मुख्यमंत्रियों 17 केंद्रीय मंत्रियों को चुनावी मैदान में उतारा था। फिर भी भगवा खेमा बुरी तरह विफल रहा।

एमसीडी में भाजपा की यह अपमानजनक हार इस पृष्ठभूमि में भी उल्लेखनीय है कि पार्टी ने 2019 के लोकसभा चुनाव में सभी सात लोकसभा सीटों पर

जीत हासिल की थी, लेकिन 2020 के चुनाव में 70 विधानसभा सीटों में से केवल 3 ही जीत सकी थी। आप ने विधानसभा में 67 सीटें जीती थीं और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल बड़े राजनीतिक आयाम में शासन कर रहे थे।

मोदी सरकार ने केजरीवाल के पंख काटने के लिए सब कुछ किया। यहां तक कि राज्य की परिभाषा भी एक कानून के माध्यम से बदल दी गई- जो कहता है कि दिल्ली में सरकार का मतलब लेफ्टिनेंट गवर्नर है। इसने मुख्यमंत्री और उनकी सरकार को केंद्र सरकार के इशारे पर काम करने वाले महत्व के हर मुद्दे पर एलजी के फैसलों पर निर्भर रहने की जरूरत बनाई। दिल्ली के मुख्यमंत्री की प्रशासनिक शक्ति कानून द्वारा अपंग कर दी गई है।

इतना ही नहीं केंद्र सरकार ने आप नेताओं को पकड़ने के लिए प्रवर्तन निदेशालय, केंद्रीय जांच ब्यूरो, आयकर विभाग आदि जैसी केंद्रीय जांच एजेंसियों को लगा दिया है, जिनमें से कई अब जेल में हैं। आरोपों की सत्यता का पता अदालती फैसलों के बाद ही चलेगा, लेकिन राजनीतिक रूप से इन सबका आप और उनके नेताओं की राजनीतिक गतिविधियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने हाल ही में आरोप लगाया था कि केंद्र सरकार ने आप नेताओं के खिलाफ पिछले सात वर्षों में 167 मामले दर्ज किए हैं और लगभग 800 जांच एजेंसी के अधिकारियों को उनके नेताओं के गलत कामों का पता लगाने के लिए तैनात किया गया है। भाजपा हम पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाती रहती है, केजरीवाल ने कहा, फिर मुकदमे दायर किये लेकिन उनमें से एक भी अदालत में साबित नहीं हुआ।

इस पृष्ठभूमि में भी केजरीवाल के नेतृत्व वाली आप मोदी-शाह की जोड़ी की नाक के नीचे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में एक अप्रतिरोध्य शक्ति के रूप में उभरी है। यह सब साबित करता है कि न तो नरेंद्र मोदी अजेय हैं और न ही भाजपा के चाणक्य कहे जाने वाले अमित शाह। आप की इस जीत ने भाजपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं सहित पूरे भाजपा नेतृत्व को परेशान कर दिया है, जो अब लोकसभा चुनाव 2024, जो केवल लगभग डेढ़ साल दूर है, में अपनी जीत की गारंटी मानकर नहीं चल सकते। उन्हें एमसीडी चुनावों में निष्प्रभावी हो चुके हिंदुत्व सांप्रदायिक कार्ड सहित अपनी रणनीति पर फिर से विचार करने की जरूरत है।

नतीजे बताते हैं कि भाजपा के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर अब पार्टी के लिए खतरा बन गई है और मोदी का करिश्मा खत्म हो रहा है। भाजपा अपने 15 साल के शासन में दिल्ली को साफ नहीं रख पाई, बल्कि कचरे के पहाड़ बना दिये। केजरीवाल के अधीन दिल्ली सरकार के कार्यनिष्पादन की तुलना में भाजपा के अधीन एससीडी में भाजपा बहुत खराब प्रदर्शन करने वालों के रूप में उजागर हुई। शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली और पानी आम आदमी को प्रभावित करने वाले क्षेत्र थे और

आप ने भाजपा की तुलना में अच्छा प्रदर्शन किया है। अब तक बीजेपी को पता चल गया होगा कि केवल जुमलाबाजी उनकी जीत की गारंटी नहीं दे सकती है। अगर वे 2024 के बाद सत्ता में वापसी करना चाहते हैं तो उन्हें अपने प्रदर्शन में सुधार करना होगा।

आप और केजरीवाल की राष्ट्रीय राजनीति में बड़ी भूमिका निभाने की आकांक्षा सहित कई अन्य कारणों से एमसीडी चुनावों ने राष्ट्रीय महत्व हासिल कर लिया है। आप कई अन्य राज्यों में अपना राजनीतिक आधार बढ़ा रही है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि कई राज्यों में 2023 में मतदान होने जा रहे हैं,जो एक पूर्व-आम चुनाव वर्ष है, और इसे लोकसभा आम चुनाव के लिए सेमी-फाइनल माना जाता है। आप की यह अच्छी संभावना 2024 के आम चुनाव के लिए नई धुन तय करेगी।

अरविंद केजरीवाल लगातार कांग्रेस और राहुल गांधी के खिलाफ अपने रवैये का खुलासा करते रहे हैं, और वह कांग्रेस के नेतृत्व में किसी भी विपक्षी गठबंधन का विरोध करने की संभावना रखते हैं, जो वर्तमान में लोकसभा में सबसे बड़ी विपक्षी राजनीतिक पार्टी है। कांग्रेस की इसी ताकत के दम पर बिहार के सीएम नीतीश कुमार पिछले कुछ समय से कांग्रेस के साथ विपक्ष का महागठबंधन बनाने की कोशिश कर रहे हैं। राहुल गांधी अपनी भारत जोड़ो यात्रा पर हैं, जिसे जबरदस्त अनुकूल प्रतिक्रिया मिल रही है। जो भी हो, एमसीडी चुनाव का नतीजा कांग्रेस के नेतृत्व में किसी भी महागठबंधन पर सवालिया निशान लगाती है।

राज्यों में शासन करने तथा दबदबा रखने वाले गैर-भाजपा गैर-कांग्रेसी राजनीतिक दलों को अब विपक्षी गठबंधन पर फिर से विचार करना होगा। यदि राहुल गांधी की महत्वाकांक्षा है, तो अरविंद केजरीवाल की भी महत्वाकांक्षा है कि वे 2024 के आम चुनाव में नरेंद्र मोदी के मुकाबले राजनीतिक चुनौती के रूप में उभरें। देश में संपूर्ण राजनीतिक परिदृश्य बदलने के लिए तैयार है, और 2023 में राज्य के चुनाव इसके भविष्य की दिशा तय करेंगे।

मोदी के दिल्ली और कई अन्य राज्यों में मुख्य राजनीतिक चुनौती के रूप में अरविंद केजरीवाल का सामना करने की सबसे अधिक संभावना है, खासकर उन राज्यों में जहां किसी भी राज्य के राजनीतिक दल का राजनीतिक प्रभुत्व नहीं है। एमसीडी के नतीजों ने राज्यों पर शासन करने वाले क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की उम्मीदें बहुत बढ़ा दी हैं, क्योंकि इसने एक सबूत दिया है कि भाजपा और मोदी-शाह की जोड़ी को दिल्ली की तरह हार के साथ सत्ता से बाहर किया जा सकता है। कांग्रेस के पास यह सीखने का भी एक सबक है कि उन्हें न केवल राज्यों में अपने समर्थन आधार की रक्षा करने की जरूरत है बल्कि अपने अस्तित्व के खतरे को दूर करने के लिए अच्छा प्रदर्शन करने की भी जरूरत है।

दुनियाँ की सबसे बड़ी औद्योगिक त्रासदी

2-3 दिसम्बर 1984 की रात लोगों के लिए एक मौत का मंजर लेकर आया था उस रात हवा में मौत बह रही है जो उस हवा के संपर्क में आये उसे पल में मौत के आगोश में लेने को आतुर थी । आज भी वह खौफनाक रात को याद कर सिहर जाते है लोग ! जी हाँ मैं उस त्रासदी के बारे में ही बताने जा रहा हूँ दुनिया की सबसे बड़ी त्रासदी के रूप में इतिहास के पन्नो में दफन है । वह मंजर को याद करने से लगता है जैसे उस रात मौत का कहर लोगो को ग्रास बनाने के लिए लोगो के पीछे दौड़ रहा था । किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, कहाँ जाए । बस लोग अपनी जान बचाने के लिए दौड़े जा रहे थे और जहरीली गैस की चपेट में आकर अपना दम तोड़ते जा रहे थे । उस काली रात ने लोगो के जीवन की साँसे छीन ली थी, जिधर देखो उधर लाशो का ढेर नजर आ रहा था । पशु-पक्षी, मनुष्य सब के सब लाशो के ढेर दिखाई दे रहे थे । ऐसा लग रहा था जैसे यहाँ मौत का तांडव चल रहा हो। उस रात जहरीली हवा के संपर्क में आने वाला कोई भी इस कहर से अछूता न रह पाया । सब के सब किसी न किसी प्रकार से उसके प्रभाव में आये हुए थे । यूनियन कार्बाइड नामक फैक्ट्री के पास की झुग्गी-बस्ती को सबसे पहले अपना शिकार बनाई, यहाँ काम की तलाश में दूर-दराज गांव से आकर लोग रह रहे थे। इन झुग्गी-बस्तियों में रह रहे कुछ लोग तो नींद में ही मौत का ग्रास बन गये । जब गैस धीरे-धीरे लोगों को घरों में घुसने लगी, तो लोग घबराकर बाहर आए, लेकिन यहां तो हालात और भी ज्यादा खराब थे। किसी ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया, तो कोई हांफते-हांफते ही मर गया। इस तरह के हादसे के लिए कोई तैयार नहीं था। जैसे-जैसे रात बीत रही थी, अस्पतालों में भीड़ बढ़ती जा रही थी, लेकिन डॉक्टरों को ये मालूम नहीं था कि हुआ क्या है? और इसका इलाज कैसे करना है?

इस गैस त्रासदी को 38 साल हो चुके हैं, आइये जानते है क्या हुआ उस भयंकर काली रात को जिसने हजारों लोगों को पल में मौत का ग्रास बना डाला । भोपाल में 2-3 दिसम्बर 1984 यानी आज से 38 साल पहले दर्दनाक हादसा हुआ था । इतिहास में जिसे भोपाल गैस कांड, भोपाल गैस त्रासदी का नाम दिया गया है, भोपाल गैस त्रासदी दुनिया की सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटना मानी जाती है । 2 और 3 दिसंबर 1984 की रात भोपाल स्थित यूनियन कार्बाइड नामक कंपनी के कारखाने से एक जहरीली गैस मिथाइल आइसोसायनाइड का रिसाव हुआ, दरअसल यहां पर प्लांट को ठंडा रखने के लिए मिथाइल आइसोसायनाइड नाम की गैस को पानी के साथ मिलाया जाता था लेकिन उस रात इसके कॉन्बिनेशन में गड़बड़ी हो गई और पानी लीक होकर टैंक में पहुंच गया। इसके बर्फ प्लांट के 610 नंबर टैंक में तापमान के साथ प्रेशर बढ़ गया। इसके बाद गैस रिसाव तेजी से होने लगा। देखते ही देखते हालात बेकाबू हो गए और जहरीले के पूरे भोपाल शहर में फैल गई। यह गैस हवा के साथ मिलकर आसपास के इलाकों में फैल रही थी। इसके बाद भोपाल में लाशों के ढेर लग गए । अस्पतालों पर मरीजों की लंबी लाइन लग गई।

जिससे लगभग 15,000 लोगों की जान गई और कई लोग अनेक तरह की शारीरिक अपंगता से लेकर अंधेपन के भी शिकार हुए, जो आज भी त्रासदी की मार झेल रहे हैं । सरकारी आंकड़ों के अनुसार भोपाल गैस त्रासदी में कुल 3787 मौतें हुई थीं। लेकिन गैस कांड के अगले तीन-चार दिन में हुए अंतिम संस्कारों के आंकड़े कुछ और ही कहानी कहते नजर आते हैं। गैस कांड के बाद वन विभाग के डिपो से दाह संस्कारों के लिए इतनी लकडियां गई थीं जिनसे पांच हजार से अधिक अंतिम संस्कार कर दिए जाएं। यह संख्या तो केवल दाह संस्कारों की है, इसके अतिरिक्त अन्य तरीकों से हुए शवों के अंतिम संस्कारों को जोड़ दें तो यह आंकड़ा सरकारी आंकड़ों से दोगुने से कहीं ज्यादा नजर आता है । इस हादसे का मुख्य आरोपी था जो इस कंपनी का सीईओ था, 6 दिसंबर 1984 को एंडरसन को गिरफ्तार भी किया गया लेकिन अगले ही दिन 7 दिसंबर को उन्हें, थोड किया गया, तात्कालिक सरकार के आदेश से उसे सरकारी विमान से दिल्ली भेज दिया गया और वहाँ से वह अमेरिका चला गया इसके बाद एंडरसन कभी भारत लौटकर नहीं आया । इस फाइल को भी किसी रद्दी कागजों की फाइल में किसी कोने में दफना दिया गया होगा । किन्तु आज भी उस हादसे के प्रभाव में आये लोग जो किसी तरह बच गए थे आज भी पथराई आँखों से न्याय का इंतजार कर रहे है, इस प्रकार का हादसा न हो इसका उचित प्रबंध किया जाये एवं गैर जिम्मेदारों पर शिकंजा कसा जाये ।

बेशक यह एक बहुत बड़ा औद्योगिक हादसा था, लेकिन जिस तरह का वायु प्रदूषण और उसके भीषण प्रभाव उसने भोपाल के पर्यावरण पर छोड़ा । यह गैस भोपाल के तालाबों के पानी और वहां की हवा में लंबे समय तक मिली रही और आज 38 साल बाद भी इसका असर दिखाई देता है । उस हादसे में बचे लोगों की सेहत पर ऐसे असर हुए और उन्हें कैंसर और अन्य तरह की ऐसी बीमारियां हुई जिसकी वजह से उनका इलाज मरते दम तक चला और आज बचे लोगों का इलाज आज भी चल रहा है ।

एनडीटीवी अस्त हो गया

संस्था के नाम पर भले ही एनडीटीवी मौजूद रहे, लेकिन पत्रकारिता के क्षेत्र में अनेक सुनहरे अध्याय लिखने वाले इस संस्थान का विलोप हो रहा है । हम प्रणॉय रॉय और राधिका रॉय की पीड़ा समझ सकते हैं । छोटे से प्रोडक्शन हाउस को जन्म देकर उसे चैनलों की भीड़ में नक्षत्र की तरह चमकाने वाले इस दंपत्ति का नाम यकीनन परदे पर पत्रकारिता की दुनिया में हरदम याद किया जाएगा ।उनके कोई बेटा नहीं था, लेकिन एनडीटीवी पर उन्होंने जिस तरह सर्वस्व न्यौछावर किया ,वह एक मिसाल है । अलबत्ता जिस ढंग से इस संस्था की आत्मा को बाहर निकालकर उसे प्रताड़ित किया गया ,वह भी एक कलंकित कथा है । चाहे कितने ही शिखर संपादक आ जाएं, कितने ही बड़े प्रबंधक ,पैसे वाले धन्ना सेठ आ जाएं, उसे हीरे मोती पहना दें , लेकिन यश के शिखर पर वे उसे कभी नहीं पहुंचा सकेंगे ।ठीक वैसे ही ,जैसे एस पी सिंह के बाद कोई संपादक रविवार को वह ऊंचाई नहीं दे सका और आज तक चैनल की मांग में तो सिंदूर ही एस पी का लगाया हुआ है ।बाद के संपादक एस पी की अलौकिक आभा के सामने कुछ भी नहीं हैं ।कहने में कोई हिचक नहीं कि एक व्यक्ति किसी भी संस्थान को बुलंदियों पर ले जाता है और एक दूसरा व्यक्ति उसे पतन के गर्त में धकेल देता है । टीवी पत्रकारिता के पिछले पच्चीस बरस में हमने ऐसा देखा है ।इसलिए एन डी टीवी का सूर्यास्त देखना बेहद तकलीफदेह अहसास है ।

ज़ेहन में यादों की फ़िल्म चल रही है । स्वस्थ्य पत्रकारिता के अनगिनत कीर्तिमान इस समूह ने रचे।अपने पत्रकारों को आसमानी सुविधाएं और आज़ादी दी ।क्या कोई दूसरी कंपनी आपको याद आती है ,जो लंबे समय तक अपने साथियों के काम करने के बाद कहे कि आपका शरीर अब विश्राम मांगता है । कुछ दिन संस्थान के ख़र्च पर सपरिवार घूमने जाइए ।आज किसी चैनल को छोड़ने के बाद उसके संपादक या रिपोर्टर को चैनल पूछता तक नहीं है ।लेकिन इस संस्था ने सुपरस्टार एस पी सिंह के अचानक निधन पर बेजोड़ श्रद्धांजलि दी थी और अपना बुलेटिन उनकी एंकरिंग की रिकॉर्डिंग से खोला था । प्रतिद्वंद्वी समूह के शिखर संपादक को ऐसी श्रद्धांजलि एनडीटीवी ही दे सकता था ।भोपाल गैस त्रासदी के नायक रहे मेरे दोस्त राजकुमार केसवानी जब साल भर पहले इस जहां से कूच कर गए तो इस संस्थान ने ऐसी श्रद्धांजलि दी कि बरबस आंसू निकल पड़े ।तब केसवानी जी को यह संस्था छोड़े बरसों बीत चुके थे । ऐसा ही अप्पन के मामले में हुआ । अनगिनत उदाहरण हैं, जब उनके साथियों ने मुसीबत का दौर देखा तो प्रणॉय रॉय संकट मोचक के रूप में सामने आए । अनेक प्रतिभाओं को उन्होंने गढ़ा और सिफ़र से शिखर तक पहुंचाया ।

पत्रकारिता में कभी दूरदर्शन के परदे पर विनोद दुआ के साथ हर चुनाव में विश्लेषण करने वाले प्रणॉय रॉय का साप्ताहिक वर्ल्ड दिस वीक अदभुत था । जब उन्होंने एक परदेसी समूह के लिए चौबीस घंटे का समाचार चैनल प्रारंभ किया तो उसके कंटेंट पर कभी समझौता नहीं किया। सरकारें आती रहीं, जाती रहीं, पर एनडीटीवी ने उसूलों को नहीं छोड़ा । हर हुकूमत अपनी नीतियों की समीक्षा इस चैनल के विश्लेषण को ध्यान में रखते हुए किया करती थी । एक धड़कते हुए सेहतमंद लोकतंत्र का तकाज़ा यही है कि उसमें असहमतियों के सुरों को संरक्षण मिले और पत्रकारिता मुखर आलोचक के रूप में प्रस्तुत रहे । इस नज़रिए से समूह ने हमेशा पेशेवर धर्म और कर्तव्य का पालन किया ।

मेरी छियालीस साल की पत्रकारिता में एक दौर ऐसा भी आया था ,जब मैं आज तक को जन्म देने वाली एस पी सिंह की टीम का हिस्सा बना था और इस संस्था से भावनात्मक लगाव सिर्फ़ एस पी के कारण आज भी है । उनके नहीं रहने पर भी यह भाव बना रहा ।दस साल बाद जब मैं आज तक में सेंट्रल इंडिया के संपादक पद पर काम कर रहा था तो मेरे पास एन डी टी वी समूह का खुला प्रस्ताव आया था कि अपनी पसंद का पद और वेतन चुन लूं और उनके साथ जुड़ जाऊं । तब एस पी सिंह की निशानी से मैं बेहद गहराई से जुड़ा हुआ था ।इसलिए अफ़सोस के साथ मैने उस प्रस्ताव को विनम्रता पूर्वक अस्वीकार कर दिया था । पर उसका मलाल हमेशा बना रहा । एक अच्छे संस्थान की यही निशानी होती है । प्रणॉय और राधिका की जोड़ी ने ज़िंदगी में बहुत उतार चढ़ाव देखे हैं ।यह दौर भी वे देखेंगे । मैं यही कह सकता हूं कि चाहेंगे तुमको उम्र भर, तुमको न भूल पाएंगे । ऐसे शानदार और नायाब संस्थान को सलाम करिए मिस्टर मीडिया ।

-राजेश बादल

ईमानदारी का कड़वा फल

बीते दिनों लोकायुक्त महानिदेशक के पद से रातोंरात हटाए जाने की वजह से आईएएस कैलाश मकवाना अचानक सुर्खियों में आ गए थे। खबरनवीसों से बात पता चली है कि शासन प्रशासन और राजनीतिक वीथिकाओं के कुछ बड़े कद पर निशाना साध चुके थे। श्री मकवाना को नहीं हटाया जाता तो एक दो दिन में ही ये धुरंधरों के चेहरे से सच्चाई को नकाब उतरना तय था। इन पर मीडिया में भी काफी चर्चा हुई और खबरें भी छपीं...

ईमानदार मकवाना के साढ़े तीन साल में 7 तबादले

कमलनाथ सरकार ने साल भर में ही कर दी थी तीन बदलियां

मकवाना के कब-कब हुए तबादले

बिच्छू डॉट कॉम

DIGITAL EDITION 2

बड़ी मछलियों पर हाथ डालना भारी पड़ा... आईपीएस मकवाना को

छह माह में ही कर दिया गया तबादला

मध्य स्वर्णिम

मकवाना को अचानक महानिदेशक लोकायुक्त से हटाना कितना सही कितना गलत...?

मकवाना को भारी पड़ी ईमानदारी

आईएएस-आईएफएस के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने के बाद से बढ़ी थी नाराजगी

6 महीने में ही कई भ्रष्टों की फाइल खोलने वाले लोकायुक्त डीजी मकवाना को हटाया

3 दिसंबर 2022

जो जिन्दा हो तो फिर जिन्दा नजर आना ज़रूरी है...

पौध-रोपण मेरे लिए जीवन रोपने के समान- मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने स्मार्ट पार्क में शीशम का पौधा लगाया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने मीडिया प्रतिनिधियों से चर्चा करते हुए कहा कि अपने संकल्प के अनुसार मेरे द्वारा प्रतिदिन पौधा रोपण किया जा रहा है। पौध रोपण मेरे लिए जीवन रोपने के समान है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने समाज के सभी वर्गों से कोरोना संक्रमण को नियंत्रित करने में सहयोग देने की अपील भी की। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि 27 मार्च से इन्दौर और उज्जैन संभाग में समर्थन मूल्य पर रबी खरीद प्रारंभ हो रही है। किसान भाई अपनी बारी का इंतजार करें। उपार्जन केंद्रों पर पर्याप्त व्यवस्था की गई है, सभी किसानों का उत्पाद क्रय किया जायगा।

शीशम का महत्व

शीशम भारतीय उप महाद्वीप का बहु उपयोगी वृक्ष है। इसकी लकड़ी, पत्तियाँ और जड़ें भी उपयोगी होती हैं। लकड़ियों से फर्नीचर बनता है। पत्तियाँ पशुओं के लिए प्रोटीनयुक्त चारा होती हैं। इसकी जड़ें भूमि को अधिक उपजाऊ बनाती हैं। पत्तियाँ व शाखाएँ वर्षा-जल की बूँदों को धीरे-धीरे जमीन पर गिराकर भू-जल भंडार बढ़ाती हैं।

मुख्यमंत्री चौहान पौध-रोपण के लिए जन-जन को कर रहे हैं प्रेरित

भोपाल, नवप्रदेश। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ चौदह वर्षीय बालक विकास खरे ने अपने जन्म-दिवस पर पौध-रोपण किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बालक विकास से जीवन पर्यत अपने जन्म-दिवस पर पौधा लगाने का संकल्प लिया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने स्मार्ट सिटी उद्यान में शहतूत, खिरनी और सामिया केसिया के पौधे लगाए। बालक विकास खरे के परिवार के श्री ललित खरे, श्री ए.पी. खरे, सुश्री अर्चना खरे और श्री इशान खरे पौध-रोपण में सम्मिलित हुए। मुख्यमंत्री श्री चौहान प्रतिदिन पौधा लगाने के अपने संकल्प के क्रम में जन-जन को निरंतर पौध-रोपण के लिए प्रेरित कर रहे हैं। इस क्रम में सामाजिक कार्यकर्ता श्री सुनील साहू भी अपने जन्म-दिवस पर परिवार सहित पौध-रोपण में शामिल हुए। साहू के साथ सामाजिक कार्यकर्ता श्री वैभव पवार तथा श्री साहू के परिवार के श्री देवेंद्र साहू, श्रीमती पार्वती साहू और श्रीमती सुशीला साहू ने भी पौध-रोपण किया।

नागरिक पौध-रोपण कर बनाए जन्म-दिन को सार्थक, मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान का आव्हान

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि वातावरण के तापमान को कम करने के लिए वृक्षारोपण जरूरी है। क्लाइमेट चेंज और ग्लोबल वार्मिंग के कारण धरती का तापमान 2 डिग्री सेंटीग्रेड बढ़ जाएगा। जिससे ग्लेशियर पिघलेंगे, समुद्र का जल-स्तर बढ़ेगा और वर्षा अनियमित होगी। इन संकटों से बचने का एक प्रभावी माध्यम वृक्षारोपण है। वृक्षारोपण को हमें अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना होगा। परिजनों की स्मृति और हर खुशी के मौके पर हम पौध-रोपण अवश्य करें। जन्म-दिवस पर फूलों के गुलदस्ते, माला पहनाने और होर्डिंग लगाने जैसी गतिविधियाँ व्यर्थ हैं। पेड़ लगाने से जन्म-दिवस अधिक सार्थक होगा। इससे हम जिस दिन दुनिया में आए हैं उस दिन का स्मरण करते हुए पृथ्वी को कुछ भेंट कर रहे होंगे। यह हमारी धरती के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति होगी। साथ ही जन्म-दिवस आदि पर वंचितों की सहायता, समाज सेवा जैसी गतिविधियों को भी प्रोत्साहित किया जाए। यह गतिविधियाँ हमारे जन्म-दिवस को सार्थक स्वरूप देंगी।

मुख्यमंत्रीने किया शिववाटिका प्रकृति की सेवा का संकल्प पुस्तक का विमोचन

मुख्यमंत्री श्री चौहान सामाजिक संगठनों के साथ भोपाल के तात्या टोपे नगर के ए.बी.डी क्षेत्र में प्रकृति की सेवा का संकल्प वृक्षारोपण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान द्वारा अमरकंटक में 19 फरवरी 2021 को नर्मदा जयंती के अवसर पर प्रतिदिन पौध-रोपण का संकल्प लिया गया था। इस संकल्प के क्रम में कई संस्थाओं द्वारा मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ पौध-रोपण किया गया। आज आयोजित कार्यक्रम में इन संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा, नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह, चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री विश्वास सारंग, अखिल भारतीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश, मध्यप्रदेश प्रभावी श्री मुरलीधर राव, खजुराहो सांसद श्री वी.डी. शर्मा, भोपाल सांसद साध्वी प्रज्ञा ठाकुर, विधायक श्रीमती कृष्णा गौर, प्रदेश संगठन महामंत्री श्री सुहास भगत, पूर्व मंत्री श्री उमाशंकर गुप्ता, पूर्व मंत्री श्री रामकृष्ण कुसमरिया, पूर्व विधायक श्री रमेश शर्मा गुट्टू भैया तथा अन्य जन-प्रतिनिधियों के साथ पीपल और आम सहित पाँच पौधे लगाए। मुख्यमंत्री श्री चौहान के नेतृत्व में विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा प्रकृति की सेवा के संकल्प के अंतर्गत एक साथ 425 पौधे लगाए गए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने अपने संकल्प के क्रम में

19 फरवरी 2021 से अब तक किए गए पौध-रोपण पर केन्द्रित 'शिव वाटिका प्रकृति की सेवा का संकल्प' पुस्तक का विमोचन किया। वर्षभर लगाए गए पौधों पर केन्द्रित प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया गया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने पर्यावरण संकल्प पट्टिका का अनावरण भी किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने पौध-रोपण करने आयीं स्वयंसेवी संस्थाओं के सदस्यों से भेंट की।

प्रदेश को आगे ब?ाने में सामाजिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि पे?ों के बिना दुनिया नहीं चल सकती है। पर्यावरण को बचाना है तो समाज को भी आगे आना होगा। मैंने 19 फरवरी 2021 को नर्मदा जयंती पर अमरकंटक से प्रतिदिन पौध-रोपण आरंभ किया था। मैं भोपाल में रहूँ या अन्यत्र प्रवास पर मैंने प्रतिदिन पौध-रोपण किया। अब मुझे यह पौधे अपने परिजनों के समान लगते हैं। पौधे लगाने से आत्मीयता और ममत्व का भाव उत्पन्न होता है। मैं जिस दिन पौधा नहीं लगाता उस दिन अधूरापन लगता है। वर्षभर चले पौध-रोपण अभियान में कई संस्थाएँ मेरे साथ पौध-रोपण में सम्मिलित हुईं। इससे यह ज्ञात हुआ कि भोपाल में मैदानी स्तर पर बहुत लोग अनुकरणीय कार्य कर रहे हैं। पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, बाल कल्याण, महिला सशक्तिकरण और स्वावलंबन के क्षेत्र में अद्भुत कार्य हो रहा है। सामाजिक और स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा संचालित गतिविधियों से यह लगता है कि संस्थाओं के सहयोग से प्रदेश को आगे ब?ाया जा सकता है, जन-कल्याण के कार्य को विस्तार दिया जा सकता है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि पर्यावरण के लिए सभी की ओर से चिंता व्यक्त की जाती है, परंतु यदि पर्यावरण को बचाना है तो समाज को भी सतत साधना करनी होगी। पे? लगाने के कार्य को हमें अपने जीवन की आदत में सम्मिलित करना होगा। इससे हमें संतोष भी होगा और हम अन्य साथियों को भी प्रेरणा दे सकेंगे।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने वर्ष 2070 तक नेट जारी कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य दिया

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि भारत पर्यावरण के अपने संकल्पों को पूरा करेगा। प्रधानमंत्री ने वर्ष 2070 तक नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य दिया है। इसके लिए उनके द्वारा किये जा रहे अनेक प्रयास में प्रमुख प्रयास है वृक्षारोपण। परंतु एक व्यक्ति के पे? लगाने से यह लक्ष्य पूर्ण नहीं होगा। हम सबको आगे आना होगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रदेश की जीवनदायिनी नर्मदा नदी की धार पे?ों से प्रकट होती है। पे? जो बूंद-बूंद के रूप में जल छो?ते हैं उससे ही नदी की धार बनती है। पृथ्वी पर 3 ट्रिलियन से अधिक वृक्ष मौजूद हैं। अमेजन वर्षा वन, जिसमें पृथ्वी के शेष वर्षा वनों का आधा भाग सम्मिलित हैं, में 390 अरब पेड़ हैं। यह वृक्ष ही ऑक्सीजन देने के साथ-साथ कार्बन उत्सर्जन को सोखने का कार्य कर रहे हैं। इनके कारण ही आज धरती बची हुई है।

पौध-रोपण के लिए जारी है अंकुर अभियान

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा पौध-रोपण के लिए अंकुर अभियान आरंभ किया गया है। अभियान के अंतर्गत पौध-रोपण के समय की फोटो अपलोड करने, पे? लगाने के तीस दिन बाद और फिर 80 दिन बाद पुन» फोटो अपलोड करने की व्यवस्था है। भावना यह है कि पौध-रोपण भी करें और पौधे की देखभाल व सुरक्षा भी करें। इस गतिविधि में सम्मिलित होने वाले रचनात्मक कार्यकर्ताओं को वृक्ष वीर और वृक्ष वीरांगना कहा जाएगा। इन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा। राज्य सरकार का प्रयास है कि प्रदेशवासियों में पौध-रोपण और पौधों को संरक्षित रखने की प्रवृत्ति का विकास हो।

धरती को सुरक्षित रखने के लिए गतिविधियाँ जारी रहेंगी

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि राज्य सरकार समाज के साथ मिलकर पौध-रोपण के कार्य को निरंतर जारी रखेगी। प्रतिदिन दो पे? लगते रहेंगे। आने वाली पी?ियों के लिए हम अच्छी और सुरक्षित धरती छो?कर जाने के उद्देश्य ये गतिविधियाँ जारी रहेंगी। यह कार्य धरती का ऋण उतारने के समान है। पे? लगाने का अभियान निरंतर जारी रहेगा।

देश ही नहीं दुनिया को भी पर्यावरण केन्द्रित विकास की आवश्यकता ङ्क श्री शिवप्रकाश

कार्यक्रम में उपस्थित सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री चौहान के संकल्प के परिणाम स्वरूप वृक्षारोपण का शुभ एवं कल्याणकारी कार्यक्रम हो रहा है। राष्ट्र के सम्मुख विद्यमान समस्याओं में से पर्यावरण भी एक प्रमुख समस्या है। इसके समाधान के लिए वृक्षारोपण जैसी गतिविधियाँ निरंतर जारी रहेंगी। भारतीय संस्कृति की पर्यावरण प्रेम की दृष्टि को हमें जीवन में उतारना होगा। देश को ही नहीं दुनिया को भी पर्यावरण केन्द्रित विकास की आवश्यकता है। श्री शिवप्रकाश ने अपील की कि हम पे? लगाएं, नदियों को स्वच्छ रखें और स्वास्थ्ययुक्त, रोगमुक्त भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करें। खजुराहो सांसद श्री वी.डी. शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री चौहान के प्रतिदिन पौध-रोपण के संकल्प का एक वर्ष पूर्ण हो रहा है। इस अवसर पर प्रदेश की स्वयंसेवी संस्थाओं का आगे आकर पौध-रोपण करना आज के दिन को ऐतिहासिक बनाता है।

सामाजिक संगठनों द्वारा रोपे गए 14 प्रजातियों के पौधे

प्रकृति की सेवा का संकल्प कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा 14 प्रजातियों के 425 पौधे लगाए। इसके अंतर्गत मोलश्री के 100, कोनो कार्पस के 50, कचनार, बेलपत्र, पीपल, बरगद, शीशम, नीम, आम, सकोदिया और अमरूद के 25-25, सप्तपर्णी व पार्किया के 20-20 और पारिजात के 10 पौधे लगाए गए। मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ गत माहों में वृक्षारोपण में सम्मिलित हुई संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने आज ए.बी.डी. एरिया में पौध-रोपण किया।

मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ गत माहों में मन्नत सोशल वेलफेयर, गौ-शिल्प इंटरप्राइजेज, नटराज परफार्मिंग एंड वेलफेयर सोसायटी, वॉटर एड इंडिया, ऑस्क संस्थान, अवनी वेलफेयर सोसायटी, संगिनी संस्था, कबा? से जुगा? स्वच्छता टीम, पंडित दीनदयाल उपाध्याय बोरवन क्लब, सार्थक, गौ-ग्रास एक पहल, पैसेफिक ब्लू सोसायटी, आवृत्ति, पर्व फाउंडेशन, आई क्लीन टीम, निर्माण परिवर्तन की ओर, केजीएन सोशल फाउंडेशन, ड्रीम भोपाल ग्रीन भोपाल, हेल्प बॉक्स फाउंडेशन, नर सेवा नारायण सेवा समिति, आर वन, आई.एन.सी और क्रिकेट एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा पौध-रोपण किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ भोपाल सिटी लाइव, धर्मश्री फाउंडेशन, द लॉयन सिटी ग्रुप, बुक वाला, दिशांजलि सोसायटी, जीवन सार्थक फाउंडेशन, स्वेच्छा, कुंजल वेलफेयर सोसायटी, रिटर्न गिफ्ट टू मदर अर्थ, रोबिन हुड आर्मी, स्कायर एलएलपी स्वैच्छिक संगठन, एंजल्स वेलफेयर सोसायटी, गौकाष्ठ संवर्धन एवं पर्यावरण संरक्षण समिति, एक्सेलवेंचर सोसायटी, नवरचना, सामाजिक न्याय परिषद, दीपरेखा, टीम क्लीन एंड ग्रीन, बचपन, मुस्कान, एटमोस वेलफेयर सोसायटी, आवाज जन-कल्याण समिति, तृप्त सामाजिक सेवा संस्थान, द होप ऑफ चेंज तथा अटल बिहारी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान के पदाधिकारियों ने भी पौध-रोपण किया है।

अन्नाशेष वेलफेयर सोसायटी, सेवा संकल्प युवा संगठन, पर्यावरण प्रेमी कुहू शर्मा एंड ग्रुप, शिव सोशियो कल्चरल सोसायटी, बंसल न्यूज, न्यूज नेशन, जी-न्यूज, आई.बी.सी-24 न्यूज चैनल, सहर्ष वेलफेयर सोसायटी, मुस्कान सोशल वेलफेयर सोसायटी, प्रयास टीम, रक्षिता वेलफेयर सोसायटी, उमंग गौरवदीप वेलफेयर सोसायटी, रेडियो आर.जे., बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र, लेट आर.सी.एस, मेमोरियल हेल्थ एज्युकेशन एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी तथा लेकसिटी जे.एल.यू. संस्थाएँ भी पौध-रोपण अभियान से जु?ी। मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ विभिन्न योजनाओं के हितग्राही, अंकुर अभियान से जु? अंकुर मित्र, नगर निगम के साथ कार्य कर रहे स्वच्छता मित्रों सहित प्रसिद्ध शायर श्री मंजर भोपाली, जन-प्रतिनिधि श्री सुरजीत सिंह चौहान, श्री राहुल कोठारी, श्री सुमित पचौरी आदि भी वृक्षारोपण में शामिल हुए।

कमलेश्वर का 'अंतिम सफर'

आजादी की ल?ाई के समय बच्चों के बीच सक्रियता के लिए इंदिराजी वानर सेना बनाती हैं। मोतीलाल नेहरू उन्हें पत्र लिखते हैं कि वानर सेना के बैज पर बनी हनुमानजी की तस्वीर में उनके हाथ में गदा नहीं है।

विजय मनोहर तिवारी

25 सालों तक मीडिया में सक्रिय रहे। प्रिंट और टीवी दोनों का अनुभव। 8 किताबें प्रकाशित। वर्ष 2010 से 2014 के बीच लगातार 5 साल तक भारत की 8 बार यात्राएं की हैं। वर्ष 2005 में छपकर आई 'हरसूद-30 जून' को भारतेंदु हरिश्चंद्र अवार्ड मिला। यह एक बांध परियोजना में डूबे गांव-कस्बों की आंखों देखी कहानी है जिस पर प्रसिद्ध कथाकार कमलेश्वर ने एक कहानी लिखी थी। आउटलुक के साहित्य विशेषांक में प्रकाशित इस कथा में विजय मनोहर तिवारी को भी एक पात्र बनाया गया था। वर्ष 2008 में उपन्यास 'एक साध्वी की सत्ता कथा' और 2010 में भोपाल गैस हादसे पर 'आधी रात का सच' प्रकाशित। भारत की यात्राओं पर केंद्रित वृतांत है- 'भारत की खोज में मेरे 5 साल' जिसे मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। कोरोना के पहले चरण में देशभर में घटी अप्रत्याशित घटनाओं की डायरी 2020 में छपकर आई- 'उफ यह मौलाना'। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित गणेश शंकर विद्यार्थी राष्ट्रीय सम्मान दिया गया है। यात्रा वृतांत डायरी और रिपोर्ताज में शतत लेखन के लिए हाल ही में मध्य प्रदेश शासन के प्रतिष्ठित शरद जोशी राष्ट्रीय सम्मान के लिए चुने गए हैं। देश के प्रतिष्ठित बहुकला केंद्र भारत भवन के न्यासी और मध्यप्रदेश में राज्य सूचना आयुक्त के पद पर कार्यरत हैं। भारत में इस्लाम के फैलाव पर 30 साल के अध्ययन एवं शोध पर केंद्रित दस्तावेज इसी साल छपकर आ रहा है।

प्रसिद्ध कथाकार कमलेश्वर की अंतिम कृति है-'अंतिम सफर।' यह इंदिरा गांधी पर केंद्रित है। 2010 में हिंद पॉकेट बुक्स से छपी यह किताब पेंग्विन से इसी साल फिर से छपी है, जिसके बैक कवर पर बताया गया है कि इंदिरा गांधी के बलिदान के बाद उनके संपूर्ण जीवन को वास्तविक तथ्यों के साथ परदे पर लाकर कमलेश्वर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि देने की अभिलाषा रखते थे। परंतु उनके अचानक देहांत के बाद उनकी यह कालजयी कृति पर्दे पर जीवंत नहीं हो सकी। यह मात्र इंदिराजी पर आधारित गाथा नहीं है वरन इसमें विकासशील से विकसित होते भारत का आजादी के केब ाद का संपूर्ण इतिहास भी रोचकता के साथ दिया गया है।

पेंग्विन ने इसे 'कालजयी कृति' कहा है। जबकि 'कितने पाकिस्तान' के प्रभावशाली उपन्यासकार कमलेश्वर की यह सबसे कमजोर कृति है। शायद इसकी वजह यह है कि इंदिरा गांधी के पूरे जीवनकाल को ढाई घंटे की एक फिल्म या दो सौ पेज की एक किताब में समेटने के कारण बहुत से ज्वलंत विषयों का केवल सरसरी तौर पर ही नजर आना स्वाभाविक है। इंदिरा गांधी जिस परिवेश में पैदा हुई, पली-ब?ीं और आजाद भारत के पहले प्रधानमंत्री अपने पिता जवाहरलाल नेहरू के साथ जिन्होंने राजनीति के पहले पाठ प?, उनके जीवन में बहुत कुछ ऐसा है, जिस पर बहुत शोधपूर्ण और प्रभावशाली चलचित्र बन सकते हैं। किताबें लिखी जा सकती हैं।

मसलन कांग्रेस के पुराने पके हुए चावलों को हांडी से बाहर फैंककर हांडी सहित चूल्हे पर अपने आधिपत्य को कायम करना, उनकी पहली ब?ी सियासी विजय थी, जो एक पूरी फिल्म का रोचक कथानक हो सकता है। 1975 में आपातकाल पर तो कई एंगल से शोधपरक और निष्पक्ष कार्य की गुंजाइश है, लेकिन वह उस इरादे से संभव नहीं है, जो कमेलश्वर की इस कृति का मूल भाव है-'इंदिरा जी को सच्ची श्रद्धांजलि।' आपातकाल पर भक्तिभाव से कुछ नहीं रचा जा सकता। पोस्टमार्टम से ही यह सच्चाई सामने लाई जा सकती है कि कैसे देश को पारिवारिक रसोई की हाँडी समझा गया, जिस पर अपने स्थाई कब्जे के लिए वे किसी भी हद तक जा सकती थीं और गईं।

1971 में बांग्लादेश का निर्माण उनकी सकारात्मक छवि को चमकाने के लिए बेशक एक भरपूर फिल्म और शानदार किताब का मसाला है। राबर्ट पेन का एक उपन्यास इस पर है, जिसमें उन्होंने पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान के साथ भारत की पृष्ठभूमि पर तटस्थ भाव से बंटवारे के 25 साल के भीतर पाकिस्तान के टूटने की जोरदार कहानी लिखी है।

ऑपरेशन ब्लू स्टार , जो उनके दुखद अंत का कारण बना, अपने आप में आजाद भारत का एक और संपूर्ण किंतु दुखद कथानक है। पंजाब की राजनीति को उन्होंने किस तरह प्ले किया, यह कौन बताएगा? क्यों एक ऐसे ऑपरेशन की नौबत आई, जिसने भारत की एक महान योद्धा जाति के सम्मान को ठेस पहुंचाई और वो कौन लोग थे, जो नवंबर 1984 में सिखों पर हिंसा को जस्टीफाई कर रहे थे-'जब एक ब?ा दरख्त गिरता है तो जमीन हिलती ही है।'

ये ऐसे विषय हैं, जो नेहरूजी की बेटी के राजनीतिक कौशल और कमजोरियों पर गहरी प?ताल के साथ आते तो पाठकों और दर्शकों पर असर छो?ते। अंतिम समय में कमलेश्वर बेहद जल्दबाजी में जो लिख सकते थे, वही लिखा और पूरी प? जाने के बाद एक विनम्र पाठक के रूप में मेरा निष्कर्ष यह है कि यह अमर चित्रकथा की किसी श्रृंखला के लिए यह कॉपी ठीक है, जिसके जरिए बच्चों को इंदिरा गांधी से संबंधित कुछ बुनियादी बातें बता दी जाएं। एक था राजा, एक थी रानी, एक राजकुमार था। मिठास भरी एक होम्योपैथिक स्क्रिप्ट, जिसके कोई साइड इफेक्ट नहीं हैं। जबकि इंदिराजी का जीवन इफेक्ट और साइड इफेक्ट से भरा हुआ है।

कुछ प्रसंग गौर कीजिए

आजादी की ल?ाई के समय बच्चों के बीच सक्रियता के लिए इंदिराजी वानर सेना बनाती हैं। मोतीलाल नेहरू उन्हें पत्र लिखते हैं कि वानर सेना के बैज पर बनी हनुमानजी की तस्वीर में उनके हाथ में गदा नहीं है। पत्र प?ते हुए इंदु ने नाक सिको?ी, और मन ही मन कहा-गदा हिंसा का प्रतीक है और हमारी सेना अहिंसक है। इसलिए उनके हाथ में गदा नहीं दी गई।

यह प्रसंग तब का है, जब इंदिरा, राजीव और पद्मा नायडू के साथ शाम को गांधीजी से मिलने बि?ला भवन गईं। वे बापू को बताती हैं कि मैं आजकल रिफ्यूजी कैंपों में जाकर राहत काम करती हूं। बापू कहते हैं-तुमको खासतौर से मुस्लिम इलाकों में जाना चाहिए और हालात का जायजा लेना चाहिए। इंदिराजी के लिए

इसके बाद रिफ्यूजी राहत का पर्याय मुस्लिम इलाके हो गए। वे वहीं जाने लगीं।

इतना ही नहीं, अगली बार जब वे बापू के सामने आती हैं तो बापूजी महाराज उनसे अपडेट लेना नहीं भूलते, जो काम तुम्हें सौंपा गया था, वो कहां तक पहुंचा। यह दृश्य उस पृष्ठभूमि का है, जब पंजाब और सिंध के लाखों लुटेपिटे और बरबाद हिंदू दिल्ली की सर्दी में प?े हुए थे और देश भर में फैल रहे थे। जो ताजा बने पाकिस्तान में कत्लेआम में मार दिए गए थे, उनका तो कोई हिसाब ही नहीं है। बापू की चिंताएं अलग थीं और यह नेहरूजी की अगली पी?ी की ट्रेनिंग थी।

फिरोज का रोल बहुत अंधेरे में है। कमला नेहरू के सामने आने पर जब वे उसका नाम पूछती हैं तो वह केवल 'फिरोज' कहता है। उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि पूरी तरह नदारद है। फिरोज की एक बहन तहमीना केवल तब नजर आती है, जब उनकी मौत होती है। वह पूरे समय आनंद भवन में ही मंडराता हुआ दिखता है या नेहरू परिवार के आसपास। ऐसा लगता है कि इंदिराजी के निकट आने और उनका जीवन साथी बनने के लिए ही वह कांग्रेस में सक्रिय थे। अगर यही उनका इरादा था तो वह अपने इरादे में कामयाब हुए। वह घर जमाई की तरह ही कमलेश्वर की कृति के आनंद भवन में रहे और उनका अंतिम संस्कार हिंदू पद्धति से हुआ, जिसे राजीव मुखाग्नि देते हैं। इलाहाबाद में फिरोज के पारसी परिवार की कांग्रेस में सक्रियता के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

संजय गांधी की मौत के बाद मेनका और इंदिरा गांधी के बीच टकराव की झलक इंदिरा गांधी के इस संवाद में है, जो वे पुपुल जयकर से कह रही हैं-मेनका और उसकी मां अमितेश्वर दोनों ही बहुत महात्वाकांक्षी हैं। पहले इन्होंने अपनी पत्रिका सूर्या को आरएसएस के आदमी को हाथों बेच दिया और मुझे बताया भी नहीं और अब संजय के वफादार युवक कांग्रेसियों की लखनऊ में बैठक बुलाने की बात हो रही है।

यह एक सरल और आसान रेखा में खींची गई इंदिरा गांधी की तस्वीर है। लेकिन इंदिराजी के पारिवारिक और राजनीतिक जीवन में बहुत कुछ ऐसा है, जिसमें कई जटिल सिरे भी हैं। अनेक अप्रिय प्रसंग हैं, जो सर्वज्ञात हैं। लेकिन यह किताब उनसे बहुत दूर से बचकर निकलती है। यह उनका अंतिम कालजयी उपन्यास बिल्कुल नहीं है। कालजयी एक बहुत ब?ा शब्द है, जिसे इस किताब पर खर्च करना प्रकाशक की ओर से व्यर्थ का दावा भर है।

यह बुलंद इरादों वाली एक ऐसी महिला पर लिखी गई किताब है, जिसकी परवरिश राजसी माहौल में हुई। इलाज के लिए स्विटजरलैंड, खरीददारी के लिए पेरिस और छुट्?टी मनाने के लिए दक्षिण या पहा?ों की सैर, जिनके जीवन में वीकेंड एंजॉय सा था। यह उनकी पारिवारिक आर्थिक समृद्धि की एक झलक है, जो मोतीलाल नेहरू की बदौलत थी। अपने समय के कांग्रेस के शिखर नेताओं का आवागमन जिनके घर में आम था, इंदिराजी का बचपन ऐसे माहौल में बीता।

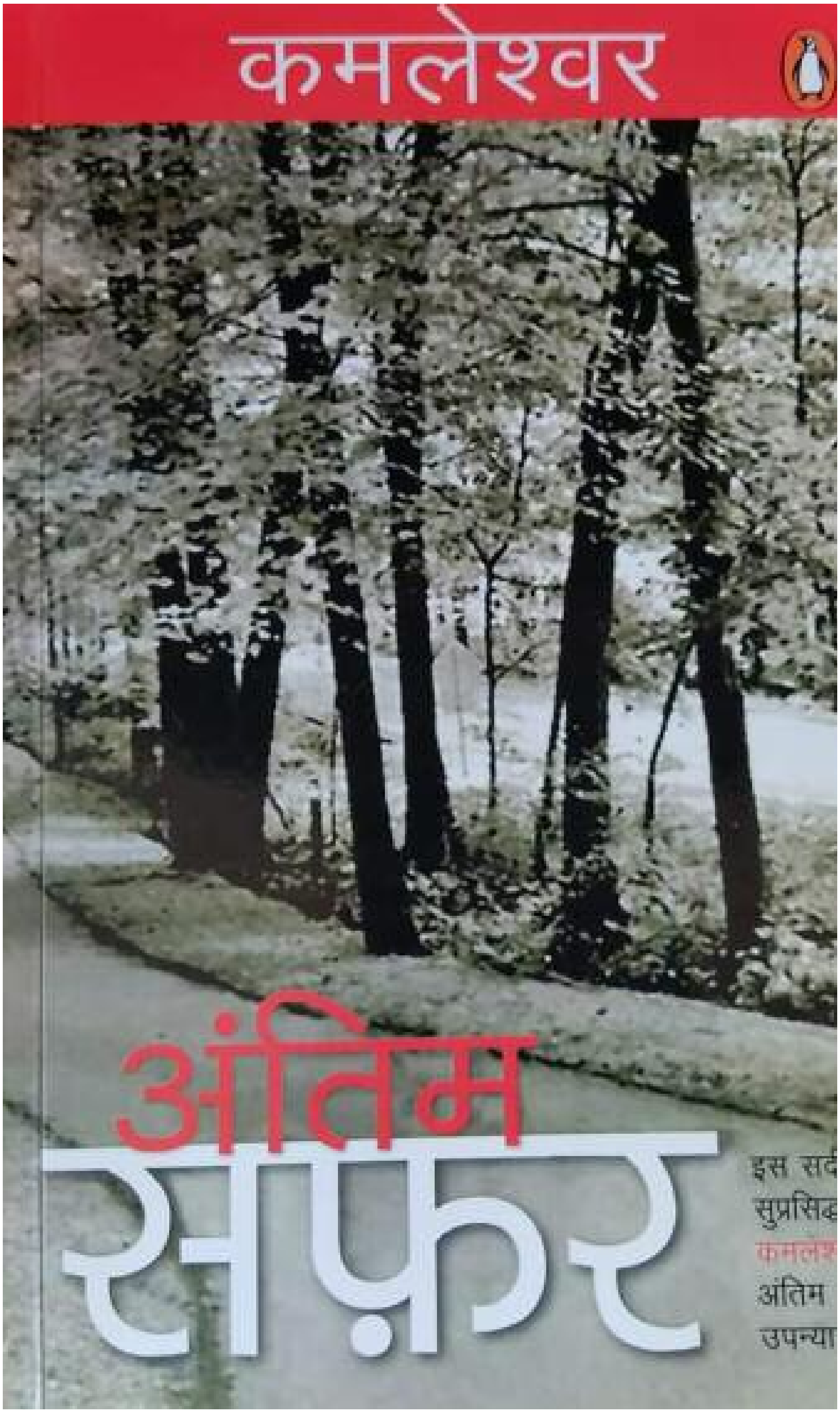

उनके लिए अंग्रेजों की आरामदेह जेलें थीं और जब वे अपने 'पापू' से मिलने जाया करती थीं तो जेलर अपनी गा?ी रेलवे स्टेशन पर लगाया करते थे।

प्रधानमंत्री पिता के साए की तरह वे सत्ता के आसपास रहीं और उनके खुद के सत्ता में आते ही नेहरू परिवार ने एक तरह से भारत पर सियासी राजतंत्र स्थापित कर दिया, जिसे आज के भारत का वोटर परिवारवाद कहकर दुत्कार रहा है और फिरोज-इंदिरा की तीसरी पी?ी को अनुकंपा नियुक्ति देने के लिए तैयार नहीं है, जो नेहरूजी को जो?कर चौथी पी?ी की संघर्षरत हितग्राही बनकर भारत को जो?ने की जद्दोजहद में है।

लोकसभा में विपक्ष के नेता भूमिका और प्रासंगिकता

सलिल सरोज
कार्यकारी अधिकारी लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली 9968638267

भारतीय संसद के लोक सभा में विपक्ष के नेता के पास कमोबेश समान अधिकार हैं जो इंग्लैंड के संसद से कहीं न कहीं से उत्पन्न हुआ है और जिसका कानून या सदन के नियमों के अनुसार कोई आधिकारिक कार्य नहीं होता है। इंग्लैंड में, महामहिम का विरोध महामहिम की वैकल्पिक सरकार है। इसलिए, महामहिम का विरोध, महारानी की सरकार के लिए दूसरे स्थान पर है और विपक्ष का नेता लगभग महारानी का वैकल्पिक प्रधानमंत्री है।

तकनीकी रूप से, हालांकि, वह केवल मुख्य विपक्षी दल के नेता हैं। विपक्ष में कई पार्टियां हो सकती हैं, लेकिन विपक्ष का मतलब अस्थायी रूप से अल्पमत में दूसरा मुख्य दल है, जिसके कार्यालय में अनुभवी नेता हैं जो वैकल्पिक सरकार बनाने के लिए समय आने पर तैयार हैं। यह इस बात की गारंटी देता है कि इसकी आलोचना एक सुसंगत नीति द्वारा निर्देशित होगी और जिम्मेदारी के साथ संचालित की जाएगी।

विपक्ष के नेता का कार्य सदन के नेता के कार्य से भिन्न होता है, लेकिन फिर भी यह काफी महत्वपूर्ण होता है। विपक्ष लोकतांत्रिक सरकार का एक अनिवार्य हिस्सा है। एक विपक्ष से जो अपेक्षा की जाती है वह प्रभावी आलोचना है। इसलिए यह कहना असत्य नहीं है कि संसद का सबसे महत्वपूर्ण अंग विपक्ष है। सरकार शासन करती है और विपक्ष आलोचना करता है। इस प्रकार दोनों के कार्य और अधिकार हैं।

सरकार और व्यक्तिगत मंत्रियों पर हमले करना विपक्ष का काम है। विपक्ष का काम विरोध करना है। यह कर्तव्य भ्रष्टाचार और दोषपूर्ण प्रशासन पर प्रमुख जाँच है। यह वह साधन भी है जिसके द्वारा व्यक्तिगत अन्याय को रोका जाता है। यह कर्तव्य सरकार के कर्तव्य से कम महत्वपूर्ण नहीं है। यह स्पष्ट बेतुकापन कि विपक्ष संसदीय समय को सरकार द्वारा अलग करने के लिए कहता है ताकि विपक्ष सरकार की निंदा कर सके, यह बिल्कुल भी बेतुका नहीं है। यह सदन के दोनों पक्षों की मान्यता है कि सरकार खुले तौर पर और ईमानदारी से शासन करती है और यह गुप्त पुलिस और एकाग्रता शिविरों द्वारा नहीं बल्कि तर्कसंगत तर्क से आलोचना का सामना करने के लिए तैयार है।

विपक्ष और सरकार को समान रूप से समझौते से चलाया जाता है। अल्पसंख्यक सहमत हैं कि बहुमत को शासन करना चाहिए, और बहुमत सहमत हैं कि अल्पसंख्यक को आलोचना करनी चाहिए। आपसी सहनशीलता के अभाव में संसदीय सरकार की प्रक्रिया समाप्त हो जाएगी। प्रधानमंत्री विपक्ष के नेता की सुविधा को पूरा करते हैं और विपक्ष के नेता सरकार की सुविधा को पूरा करते हैं। केवल इसी तरीके से संसदीय सरकार की व्यवस्था कायम रह सकती है। विपक्ष को बाधा डालने का कोई अधिकार नहीं है; संसद को बंजर या अनुत्पादक बनाने के अर्थ में। यदि कोई सरकार विपक्ष के अधिकारों का हनन करने का प्रयास करती है तो यह संसदीय भावना पर पार्टी भावना की जीत का सबसे स्पष्ट प्रमाण होगा। सरकार विपक्ष के अधिकारों के लिए जो अबाध सम्मान दिखाती है, उसे उसके संसदीय विश्वास की मजबूती के प्रथम दृष्ट्या प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

संसदीय लोकतंत्र में विपक्ष के महत्व को देखते हुए, विपक्ष के नेता का पद वास्तव में उत्तरदायित्वों में से एक है। वह, अन्य बातों के अलावा, अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर अतिक्रमण के लिए देखता है, बहस की मांग करता है जब सरकार संसदीय आलोचना के बिना फिसलने की कोशिश कर रही है। उन्हें अधिक से अधिक बार अपनी जगह पर होना चाहिए और एक कुशल सांसद की सभी चालों और सदन के नियमों के तहत उपलब्ध सभी अवसरों से परिचित होना चाहिए। यह ट्रेजरी बेंच के भविष्य के रहने वालों के लिए एक उत्कृष्ट प्रशिक्षण है, और लोकतांत्रिक सरकार के प्रभावी संचालन के लिए आवश्यक है। अपने कर्तव्यों और दायित्वों को निभाने में, विपक्ष के नेता को न केवल इस बात का ध्यान रखना होता है कि वह आज क्या है बल्कि वह कल क्या होने की उम्मीद करता है। भारत में, लोकसभा और राज्यसभा में विपक्ष के नेताओं को वैधानिक मान्यता दी जाती है। संसद अधिनियम, 1977 में विपक्ष के नेताओं के वेतन और भत्ते संसद के किसी भी सदन के संबंध में विपक्ष के नेता को राज्यों की परिषद या लोक सभा के सदस्य के रूप में परिभाषित करते हैं, जैसा भी मामला हो, जो कुछ समय के लिए, सरकार के विपक्ष में पार्टी के उस सदन में नेता सबसे बड़ी संख्या में है और इस तरह से राज्यों की परिषद के अध्यक्ष या लोक सभा के अध्यक्ष द्वारा मान्यता प्राप्त है, जैसा भी मामला हो शायद। उक्त परिभाषा की व्याख्या में यह स्पष्ट किया गया है कि जहां दो या दो से अधिक दल सरकार के विपक्ष में हैं, राज्यों की परिषद में या लोक सभा में, समान संख्यात्मक शक्ति वाले, परिषद के अध्यक्ष राज्यों या लोक सभा के अध्यक्ष, जैसा भी मामला हो, पार्टियों की स्थिति के संबंध में, इस धारा के प्रयोजनों के लिए ऐसे दलों के नेताओं में से किसी एक को विपक्ष के नेता के रूप में मान्यता देंगे और ऐसे मान्यता अंतिम और निर्णायक होगी।

संसद में अनुशासन और मर्यादा

किसी भी संस्था की सफलता, प्रभावशीलता और प्रतिष्ठा उसके व्यवस्थित कामकाज पर निर्भर करती है और वह किस हद तक अपनी गतिविधियों के निर्वहन के लिए अनुशासन, गरिमा और मर्यादा के मानकों का पालन करती है। इस अर्थ में अनुशासन और मर्यादा किसी भी संस्था के मूलभूत मानदंड हैं। यह विशेष रूप से संसदीय संस्थाओं के बारे में है जो लोगों की इच्छा को मूर्त रूप देती हैं और अन्य गतिविधियों के साथ-साथ कानून के प्रमुख कार्य और कार्यपालिका की जांच करने के लिए लोकतंत्र के मंच का गठन करती हैं। अनुशासन और मर्यादा के क्षरण से संसदीय संस्थाओं का क्षरण होगा। प्रतिनिधि निकायों के इन मूलभूत मानदंडों को हमेशा पवित्र माना गया है और इसलिए इन्हें संरक्षित किया गया है।

25 नवंबर 1949 को जब हमारा संविधान अपनाया गया तो डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, इसके प्रमुख वास्तुकार, ने पूछा, 'यदि हम लोकतंत्र को बनाए रखना चाहते हैं ... तो हमें क्या करना चाहिए?' उन्होंने कहा, '...मेरे विचार से पहली चीज जो हमें करनी चाहिए', वह है, 'हमारे सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संवैधानिक तरीकों पर टिके रहना'। यह कहते हुए कि 'जब आर्थिक और सामाजिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संवैधानिक तरीकों के लिए कोई रास्ता नहीं बचा था, तो असंवैधानिक तरीकों के लिए बहुत अधिक औचित्य था,' उन्होंने टिप्पणी की कि संवैधानिक तरीकों की उपलब्धता के संदर्भ में ऐसे तरीके 'और कुछ नहीं हैं, लेकिन अराजकता का व्याकरण और जितनी जल्दी उन्हें छोड़ दिया जाए, हमारे लिए उतना ही अच्छा है'। लोकतंत्र के संदर्भ में डॉ. अम्बेडकर ने जो कहा वह गहन है और लोकतांत्रिक संस्थाओं के कामकाज के लिए और भी अधिक प्रासंगिक है। जब संवैधानिक तरीके उपलब्ध हों, जब प्रक्रिया और कार्य संचालन के नियम और परंपराएं संसदीय संस्थाओं की कार्यवाही के संचालन के तरीकों और साधनों को निर्धारित करती हों और जब ऐसी संस्थाओं में सदस्यों की प्रभावी भागीदारी के लिए विस्तृत और पर्याप्त तंत्र उपलब्ध हों, नियमों, प्रक्रियाओं और संवैधानिक तरीकों के दायरे से परे जाने से हमें 'अराजकता के व्याकरण' के लेखकों के रूप में इतिहास द्वारा कठोर निर्णय के प्रति संवेदनशील बना दिया जाएगा। इसलिए, यह अनिवार्य है कि हमारे प्रतिनिधि संस्थान आदेश और अनुशासन के विषय को स्पष्ट करें और हमारे लोकतंत्र की सफलता की कहानी को लिपिबद्ध करें, जिसका इस देश के सामान्य लोग अपनी भलाई और सशक्तिकरण और आम भलाई के लिए दृढ़ता से रक्षा करते हैं। 'अनुशासन और मर्यादा' के प्रश्न उतने ही पुराने हैं जितने कि लोकतंत्र की उत्पत्ति। यह कहना गलत नहीं होगा कि लोकतंत्र की खोज समाज में जीवन के अनुशासित और व्यवस्थित अस्तित्व की खोज से उत्पन्न हुई। मानव जाति न केवल सरकार के एक रूप के रूप में बल्कि जीवन के एक तरीके के रूप में भी लोकतंत्र को और बेहतर बनाने के निरंतर प्रयासों के हिस्से के रूप में अनुशासन और मर्यादा के इन सवालों को संबोधित करती रही है। इसलिए, इस धारणा को दूर करना आवश्यक है कि ये प्रश्न मुख्य रूप से प्रचलित धारणा के कारण अचानक प्रचलन में आ गए हैं कि संसदीय संस्थाएँ इस तरह से कार्य कर रही हैं जो सापेक्ष रूप में उनकी और उनके प्रतिनिधियों की गरिमा और अधिकार के अनुरूप नहीं हैं। .जब हम अपने इतिहास के गहरे कोनों में झाँकते हैं तो हमें सुखद आश्चर्य होता है कि इसी भारत में एक समय ऐसा भी था जब गणतंत्रों ने हमारी भूमि को गढ़ा था। संसदीय प्रकार की संस्थाएँ थीं जिनकी कार्यप्रणाली निर्धारित करने के लिए विस्तृत प्रक्रियाएँ थीं जो आधुनिक समय के प्रतिनिधि निकायों की गतिविधियों के काफी निकट थीं। उन निकायों के व्यवसाय को नियंत्रित करने के लिए मानदंडों की सूची और कोरम, मतदान, निंदा प्रस्ताव आदि के बारे में सावधानीपूर्वक सूत्रीकरण, उन निकायों के अनुशासित और व्यवस्थित कामकाज के लिए प्रदान किए गए थे। आधुनिक समय में भी ऐसी संस्थाओं की जटिलता की विवशताओं और उनके कठिन उत्तरदायित्वों के परिमाण को ध्यान में रखते हुए विस्तृत नियम स्थापित किए गए हैं ताकि वे अनुशासन, शालीनता और मर्यादा के दायरे में रहते हुए सार्थक और प्रभावी ढंग से अपनी भूमिका निभा सकें। इस तरह के नियमों के पालन में कमी या उनके उल्लंघन को हमेशा से ही दुत्कारा जाता रहा है। ये अपराध और विलाप केवल बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध की घटनाएँ नहीं हैं या उन देशों तक ही सीमित हैं जिन्होंने पिछले कई दशकों के दौरान इन संस्थानों को अपनाया है; बल्कि लोकतंत्र के प्रयोग में उनके ऐतिहासिक अनुभवों की गहराई और परिपक्वता की परवाह किए बिना ये लगभग सभी लोकतंत्रों में पाए जाते हैं।

प्रारंभिक और प्रारंभिक वर्षों के दौरान, जिसे हम स्वस्थ संसदीय बहस के भंडार के रूप में देखते हैं। उस समय जिन समस्याओं का हमने सामना किया था, वे और भी जटिल हो गई हैं। इन मुद्दों पर पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन में चर्चा की गई है। उन्हें आगे संबोधित करने और उन विकृतियों का समाधान खोजने के लिए हमारे इतिहास में पहली बार संसद में पीठासीन अधिकारियों, पार्टियों के नेताओं, सचेतकों, संसदीय मामलों के मंत्रियों, सचिवों और संसद और राज्य विधानसभाओं के वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन आयोजित किया गया था। सम्मेलन ने सर्वसम्मति से अपनाए गए एक संकल्प में सहमति व्यक्त की कि लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने को बनाए रखने और संसदीय संस्थानों को मजबूत करने के लिए यह आवश्यक है कि -

(ए) जब राष्टपति और राज्यपाल क्रमशः संसद सदस्यों और राज्य विधानसभाओं के सदस्यों को संबोधित करते हैं तो मर्यादा और गरिमा बनाए रखी जाती है;

(बी) अति आवश्यक प्रकृति और असाधारण महत्व के मामले पर चर्चा करने के लिए सदन में आम सहमति के बिना प्रश्नकाल के निलंबन की मांग नहीं की जानी चाहिए और इसे स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए;

(सी) विधायकों को विचार-विमर्श करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करने की दृष्टि से विधानमंडलों को एक वर्ष में पर्याप्त संख्या में बैठकें आयोजित करनी चाहिए;

(घ) सदन में व्यवस्था और मर्यादा बनाए रखने के लिए सदस्यों को प्रक्रिया के नियमों का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए; तथा

(ङ) गहराई से अध्ययन और बारीकी से जांच करने के साथ-साथ विधायिका के प्रति कार्यपालिका की जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए संसद और राज्य विधानसभाओं में समिति प्रणाली को मजबूत किया जाना चाहिए।

भारतीय समाज ने सदियों तक विदेशी शासन और दमन को झेला और लंबे समय तक सामाजिक और आर्थिक अभावों की गहराई में डूबा रहा। अन्य समाजों की तरह, जो पीटर ड्रकर के दौर से गुजर रहे हैं, प्रबंधन गुरु 'सामाजिक परिवर्तन की उम्र' कहते हैं, भारतीय समाज अब लोकतंत्र की शुरूआत और सामाजिक परिवर्तन की कई अन्य ताकतों द्वारा लाए गए संक्रमण की स्थिति में है। ऐसे संक्रमणकालीन समाज में कुछ बेचैनी होना लाजिमी है और यह अवश्यंभावी है कि उस बेचैनी का एक अंश विधायिकाओं सहित हर संस्था में परिलक्षित होता है। यह हमारी पौराणिक कथाओं में ब्रह्मांडीय समुद्र के मंथन की तरह है। जैसे-जैसे मंथन चलता गया, पहली चीज जो निकली वह जहर थी और आखिरी चीज अमृत थी। हमारा समाज मतदान के अधिकार के लोकतांत्रिक तरीकों, समानता के अधिकार के आदर्शों और संविधान में निहित समान अवसर और लोगों के बीच इस जागृति से प्रेरित हो रहा है कि वे इस देश के नागरिक के रूप में अपने जीवन और इस देश की नियति को बदलने की शक्ति रखते हैं। एक समाज जो कई कारणों से सदियों से आधुनिक लोकतंत्र से वंचित रहा है, अब इसका अनुभव कर रहा है और इसलिए, इसके द्वारा फेंकी गई समस्याएं जहर की तरह हैं और हमें इसे निगलने के लिए एक शिव की आवश्यकता है, अन्यथा यह समाज को संकट में डाल देगा।

सलिल सरोज, नई दिल्ली

अब तो और कठिन डगर है, कांग्रेस के लिये मध्यप्रदेश जीतना

जी एल सोनाने

गुजरात चुनाव, उसके परिणाम , भाजपा की चुनाव रणनीति और कांग्रेस के हालात पर बारीकी से नज़र डालने की बहुत ज़रूरत है। कांग्रेस की , गुजरात में हालात इतनी बदतर हो गई है कि वहाँ, कांग्रेस नेता प्रतिपक्ष भी नहीं चुन सकती है।

इन सब का मतलब यह है कि , गुजरात में भाजपा की चुनावी रणनीति को बारीकी से समझने की ज़रूरत है। क्योंकि , भाजपा के सात फ़ैसलों ने उसे 156 सीटें जितवा दीं। उसने सीएम बदलें,मंत्री बदलें,बड़े नेताओं के टिकट काटें और अमित शाह बुथ लेवल से रोज़ फ़ीडबैक लेते रहे।

(2) गुजरात चुनाव से पहले बीजेपी ने सात कड़े निर्णय लिए। जैसे , चुनाव से एक साल पहले पूरी सरकार बदल दीं। और जो सीएम थे , उन्हें टिकट तक नहीं दीं। दूसरी, रूपाणी और नितिन पटेल सहित कई बड़े नेताओं की छुट्टी कर दीं।

तीसरा, कांग्रेस से आये लोगों सहित , उन लोगों को ही टिकट दीं , जो बीजेपी के मापदंड पर खरे उतरे हों। चौथा ,पिछले विधानसभा चुनाव 2017 में जहां पहले हारे थे , वहाँ प्रचार पहले शुरू किया। पाँचवाँ , 24 में से 6 मंत्रियों के टिकट, बेहिचक काट दिये। छठवाँ, बग़ावत करने वालों से सख़्ती से निपटा गया। जिसको टिकट नहीं देना था , उसी से लिखवा लिया कि - मैं चुनाव नहीं लड़ना चाहता। और सातवा , ' मैं गुजरात का बेटा हूँ ' को जीत का बड़ा फ़ैक्टर बना दिया।

(3) आम वोटर में कांग्रेस उम्मीदवारों के प्रति , विश्वास लगातार कम से कमतर होता गया। क्योंकि , 2017 में कांग्रेस ने182 में से 77 सीटें जीती थीं। किंतु, पिछले पाँच साल में 20 कांग्रेस विधायकों ने , बीजेपी ज्वाईन कर लीं।

(4) बीजेपी की इस बंपर जीत के पीछे, कांग्रेस की लचर व्यवस्था थीं। केंद्रीय नेत्रत्व की कमजोर पकड़ है। और साथ ही गुजरात को चुनाव के दौरान एकदम अकेला छोड़ देना भी , कारण है। कांग्रेस का हर उम्मीदवार अपने बलबूते पर अकेला चुनाव लड़ रहा था। दिल्ली से कैम्पेन या रिसोर्स का भी कोई सपोर्ट नहीं मिला। नतीजा यह हुआ कि कांग्रेस, साउथ गुजरात की 31 में से मात्र एक सीट जीत पाई। और तो और 27 आदिवासी बहुल सीटों में से एक भी कांग्रेस, नहीं जीत पाई।

(5) अब बात करते हैं आप पार्टी कीं। गुजरात

चुनाव में , आप पार्टी हार कर भी जीत गई और उसने, नेशनल पार्टी का लेबल प्राप्त कर लिया। वह पाँच सीटों पर जीतीं और 35 सीटों पर कांग्रेस को पीछे धकेल कर , नम्बर दो पर रहीं। इतना ही नहीं उसने 22 प्रतिशत सीटों पर अपनी स्थिति मज़बूत कीं। और उसे वोट देने वालों की संख्या 12 . 9 प्रतिशत हो गई। यानी आप पार्टी, गुजरात विधानसभा चुनाव में 40 सीटों में बढ़त बनाने में सफल रहीं।

(6) कुल मिलाकर , कांग्रेस के कुल वोट में से 12 प्रतिशत वोट , सीधे आप पार्टी में शिप्ट हो गये ! अर्थात, 2017 में आप पार्टी को 29 हज़ार वोट मिले थे , जो बढ़ कर इस बार 40 लाख से ज़्यादा हो गये !

(7) और अब आते हैं मध्यप्रदेश। गुजरात की ऐतिहासिक जीत से उत्साहित भाजपा, 2023 में मध्यप्रदेश में भी इसी फ़ार्मूले को आज़माना चाहती है और इसने , चुनाव लड़ने वालों की नींद उड़ा रखी है। कांग्रेस की परेशानी भी यही है। प्रदेश मेंकेन्द्रीय नेतृत्व का न तो सहयोग है और न ही , मार्गदर्शन। और सम्भावना यह भी है कि कोई आर्थिक सहायता भी न मिले। अर्थात, प्रदेश कांग्रेस पूरी तरह से ' स्वावलंबी ' रहेगी। मध्यप्रदेश में कांग्रेस में तनाव या गुटबाज़ी नहीं है , ऐसा भी नहीं कह सकते। क्योंकि, यहाँ भी राजा, सुरेश पचौरी, भूरिया, अजयसिंह सहित कमलनाथजी के अपने अपने फ़ालोअर हैं। जिसमें सबसे मज़बूत खेमा राजा का है। और पूर्व सीएम और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के रूप में राजा ही सर्वाधिक सक्रिय हैं। सबसे मज़बूत टीम भी उन्ही की है और सबसे ज़्यादा समर्पित कार्यकर्ताओं की फ़ौज , सिर्फ़ राजा के ही पास है। जबकि अरूण यादव और सुरेश पचौरी और कांतिलाल भूरिया और अजयसिंह का मज़बूत ग्राउंड होने के बावजूद, ये सब पेशाखियों के सहारे हैं ! अपनी व्यक्तिगत पहचान नहीं के बराबर है। पचौरी, कभी नगर पालिका का चुनाव नहीं जीतने का माद्दा रखते हैं , किंतु, ब्राम्हण वाद और चापलूसी की बदौलत कई बार राज्य सभा के सदस्य और केन्द्रीय मंत्री भी रहे। और इन्हीं की अध्यक्षता के कार्यकाल में , कांग्रेस सबसे कमज़ोर हुई , सीएम शिवराज जी से सेटींग रही और कार्यकर्ताओं की सर्वाधिक उपेक्षा भी, इन्हीं के कार्यकाल में हुई। और इसका नतीजा यह हुआ कि कांग्रेस कमजोर से कमजोर तर, होती चली गई। प्रेस की सर्वाधिक उपेक्षा भी इन्हीं के कार्यकाल की भेंट है - जिसका ख़ामियाज़ा, कांग्रेस आज भी भुगत रही है।

(8) इतनी बड़ी रामायण लिखने के पीछे की महाभारत यह है कि , गुजरात की जीत का मुआवज़ा, बीजेपी मध्यप्रदेश कांग्रेस से वसूलेगी। क्योंकि, वो , वो सारे फ़ार्मूले मध्यप्रदेश में भी आज़मायेंगी , जो गुजरात में सफल रहे हैं। इसलिए :- कांग्रेस को ग्रास लेवल पर , योजना बनाकर , काम करने की ज़रूरत है। राहुल गांधी की पद यात्रा को एक तरफ़ रखिये आपको अपनी लाईन खींचना पड़ेगी - जो आज तक अधूरी है , अस्पष्ट है , दिशा विहीन है , पहुँच विहीन है और सबसे बड़ी बात , कांग्रेस को एक महाबली ,संगठित , अनुशासित, नियंत्रित और ऐसी पार्टी से जूझना है - जो लगातार जीत का रिकॉर्ड बना रही है। दूसरी ओर , अतिउत्साही आप पार्टी है। और यह , देश की एक मात्र ऐसी पार्टी है , जो क्षेत्रीय दल से राष्टीय फलक पर बैठी है। यह देश की एकमात्र पार्टी है ,जिसने एक राज्य से कई राज्यों में अपनी उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज कराई है। और , भाजपा , बसपा,सपा, ओबीसी के बाद कांग्रेस के वोट बैंक में सेंध लगाने में सफल रहीं हैं। आप ने गुजरात चुनाव परिणाम आने तत्काल बाद , भोपाल में प्रेस कांफ्रेंस कर घोषणा कर दी कि, मध्यप्रदेश में चुनाव परिणाम फ़ेवर में आने पर वह प्रदेशवासयों को स्वास्थ्य, शिक्षा , पानी और बिजली फ़्री देंगे। और यही सब , कांग्रेस के लिये चुनौती बनने वाले हैं। किंतु, दुर्भाग्य से कांग्रेस इन सबका सतही हल खोजने में लगी है- स्थायी हल के लिए, कांग्रेस केन्द्रीय नेतृत्व के पास कोई ठोस योजना ही नहीं हैं। कांग्रेस की कार्यप्रणाली को देखते हुये ऐसा लगता भी नहीं कि वह इसके लिए गम्भीर भी है।

Bima Vihar
A Premium Housing

Live with the Nature

An upcoming Housing Society in Pure Environment.
A Chance to Romance with Nature

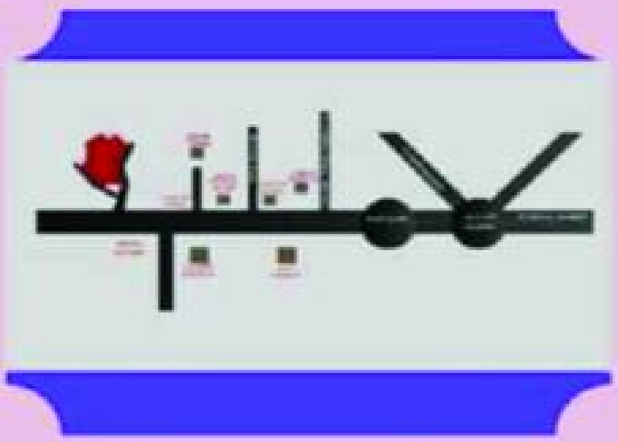

Proposed Amenities

Secured Boundary wall
Solar Electrification
Rain Water Harvesting
Water Treatment Plant
Anti-termite Treament
Power Back Up
Club House
Play Zone
Wi fi Zone
Jogging Park
and many more ......

Contact the Expert
Dhanesh Chaturvedi
Consultant

Mobile - 8269006100
Mail - lic_dhanesh@rediffmail.com
Visit our Facebook Page - www.facebook.com/BimaVihar

सुनीता यादव आनंदी
भोपाल

पनाह

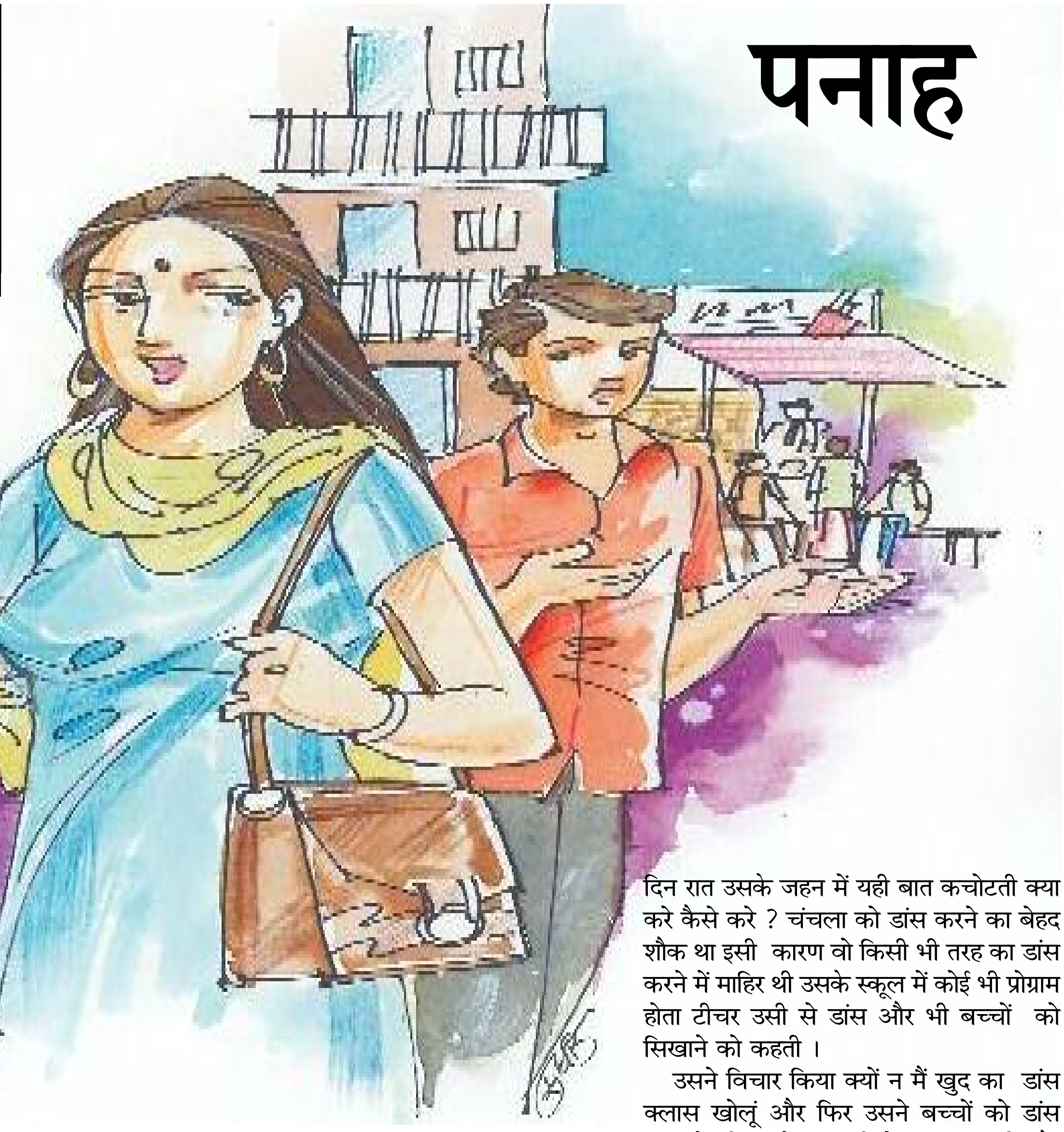

उसको किसी पर इख्तियार न था अपनी जिंदगी में वो खुद कुछ करना चाहती थी किसी की मुरीद नहीं, बिंदासगी भरा स्वभाव लोग क्या कहेंगे इस बात से कोई सरोकार नहीं ।सही भी है अगर यही सोचते रहे तो जीना दुर्लभ हो जाएं जीवन में कोई रस न रहे रस विहीन जिंदगी मौज में थी और हम तीनों खुशहाल कोई कमी न थी मैं मेरे पति और बेटी चंचला चंचला जैसा नाम वैसा ही स्वभाव उसकी मां हमेशा कहा करती बिन बाप की हो तुम्हारे सर पर बाप का साया नहीं ,कोई कुछ कहे सुन लिया करो क्यों मुंह जुवानी करती हो वो हमेशा एक ही जवाब देती ,सच को सच न कहूं ।चंचला के पिता का इंतकाल बचपन में ही हो गया ।इसी कारण वो लोग अपने ताऊ जी के साथ रहने के लिए मजबूर हो गए ।अर्थिक स्थिति भी सामान्य ही थी द्य चंचला के ताऊ जी के भी तीन बच्चे थे और चंचला अपनी मां की इकलौती औलाद, जब ताऊ जी के बच्चों को चंचला एक आंख न भाती, तीनों बच्चे जब चाहे उस पर बेबुनियाद इल्जाम लगा देते पर वो कुछ बोलती उसके पहले ही मां न बोलने के लिए इशारा कर देती मजबूरी इंसान को बेवजह झुकना सिखा देती है यही हुआ मां बेटी के साथ जब भी तीनों भाई बहन खाना खाते तब वो उनको एक टक निहारती रहती सारे कामों से फारिग होकर ही मां बेटी को खैरात में खाना मिलता बचाखुचा ऐसे खाती जैसे छप्पनभोग इस हाल में भी खुश रहती ।घर के सभी बच्चे प्राइवेट स्कूल में पढ़ते उसकी बेटी का नाम प्रायवेट स्कूल से नाम कटवा कर सरकारी स्कूल में दाखिला करवा दिया , फिर भी वो हमेशा अव्वल आती ।देखते देखते उसकी बड़ी हो चली बेटी देखती उसकी मां हमेशा नौकरानी की तरह काम करती रहती, चंचला मां को इस तंगहाल जिंदगी से छुटकारा दिलाना चाहती थी दिन रात उसके जहन में यही बात कचोटती क्या करे कैसे करे ? चंचला को डांस करने का बेहद शौक था इसी कारण वो किसी भी तरह का डांस करने में माहिर थी उसके स्कूल में कोई भी प्रोग्राम होता टीचर उसी से डांस और भी बच्चों को सिखाने को कहती ।

उसने विचार किया क्यों न मैं खुद का डांस क्लास खोलूं और फिर उसने बच्चों को डांस सिखाने की अपने ताऊ जी से इजाज़त मांगी और उनको प्रलोभन दिया, वो राजी हो गए, डांस क्लास का शुभारंभ हुआ और साथ साथ उसने अच्छी तालीम भी हासिल कर ली ।दो घंटे की डांस क्लास में अच्छी आमदनी होने लगी घर के सभी लोग खुश थे ।इसी बीच उसने बीएड कर लिया एग्जाम पास कर मैथ टीचर बनी । उसका हौसला आसमान छू रहा था, अब उसने सूझ बूझ के साथ रिश्तों के धागों सुलझाया खुशी खुशी मां को खुद की एक आज़ाद छत दी दोनों बेहद खुश थी ।पनाह कैसी भी मिले किसी के घर में किंतु चंचला कहती थी अहसानमंद हमेशा रहना चाहिए ताऊ जी के तीनों बच्चे नकारा बदगुमान आज वही ताऊ जी चंचला की तारीफ करते करते नहीं थकते और मां बेटी भी अन्याय और त्रस्कार सह कर भी उनको सम्मान देती क्योंकि उनका समय बुरा था और यही कहती है वो एक परिस्थिति थी और कुछ भी नहीं.....

दुनियाभर में फेमस है महाराष्ट्र के ये पर्यटक स्थल

महाराष्ट्र को गेटवे ऑफ द हार्ट ऑफ इंडिया भी कहते हैं. यहां पर कई ऐसे कई पर्यटन स्थल है, जो अपनी खूबसूरती के लिए देश ही नहीं पूरी दुनिया में फेमस हैं.

पंचगनी -ये राज्य का फेमस और सबसे ठंडा हिल स्टेशन है. सह्याद्री पर्वत की पांच पहाड़ियों की वजह से इस जगह का नाम पंचगनी रखा गया. यहां पर आप प्रकृति के सुंदर नजारों का लुत्फ उठा सकते हैं.

मुबंई– महाराष्ट्र के मुंबई शहर को सपनों की नगरी भी कहा जाता है. यहां पर बॉलीवुड सितारे रहते हैं. इस शहर में घूमने के गेटवे ऑफ इंडिया, जुहू बीच, मरीन ड्राईव,जैसी कई जगहें हैं.

लोनावाला– लोनावाला यहां की बहुत ही फेमस जगह है. जहां पर आपको झील, झरने और पहाड़ सब एक साथ देखने को मिल जाएंगे. ये पर्यटक स्थल मुंबई के पास ही स्थित है. अगर आप महाराष्ट जा रहे हैं तो यहां की सैर जरूर करें.

रत्नागिरी– महाराष्ट्र का ये शहर समुद्र से घिरा हुआ बेहद खूबसूरत है. यहां पर बाल गंगाधर तिलक का जन्म हुआ था. इस शहर में बहुत लंबा समुद्र तट और कई बंदरगाह भी हैं. इसके अलावा भी यहां पर देखने लायक कई चीजें है.

पुणे – महाराष्ट्र का पुणे शहर भी अपनी सुंदरता के लिए काफी फेमस है. इसके साथ ही पुणे महाराष्ट्र का दूसरा सबसे बड़ा शहर भी है. यहां पर आप किलें, समुद्र तट, पिकनिक स्पॉट और झरनों का मजा ले सकते हैं.

कविताएं

धूमकेत

बहुत दिनों के बाद दिखे हैं, प्रसन्न हमारे नेता जी,
जलसे, जुलूस ,सद्भावना रैली, फुर्सत में है नेताजी?

जिनके दिल है कालेकाले ,कारनामे भी जिनके काले,
संस्कृति को कर रहे सुशोभित बनकर बड़े प्रणेता जी?

श्रद्धा से जो करे समर्पित नई-नई अनछुई कली को,
मेहरबान उन पर रहते हैं , बनकर खास चहेता जी?

दुश्यचरित्र कुल्टा पतिताएं नगरवधुऐं सभ्यजगत की,
इनकी मेहफिल में आते ही,बन जाती सब स्वेता जी?

श्रम ,साधना और लगन से , टीम बनाई नौ बच्चों की,
भैंस चराएंगे क्या फिर से ,उन नेता के बेटा जी ?

शर्मदार के लिए बूंद भर पानी था जिस लुटिया में,
उसे ढूंढते गुम जाने पर , मुंबई में अभिनेता जी ?
राणा और वीरशिवा को बतलाते जो खुद का वंशज,
ऐसे चरित्रवान को देखा, पीकर गटर में लेटा जी?

एकएक क्षण बड़ा कीमती, बर्बाद किया चुटकुले सुनकर,
कहां फस ,गए कैसे छूटे , सोच रहे सब श्रोता जी ?

वेद ,पुराण, गीता ,रामायण संस्कृति के आधार हमारे,
जिन्हें त्याग कर कामशास्त्र को खरीद रहे सब क्रेताजी

सिंह होकर गीदड़ सी वाणी, समझा इन्हें भवानी मां,
पीर गेट पर खड़े हुए हैं हाथ जोड़कर मेहता जी ?

कौरी चादर , दाग है गहरे, दुखी बेचारे धूमकेतु
,जिन्हें रगड़ कर मिटा रहे हैं ,रोते हुए बरेठा जी ?

चिंतन ?

अपराधी सुख सुविधा भोगे , रचा ये कैसा खेल
ईमानदार दुख पीड़ा झेले , प्रभु ये कैसी जेल ?

शक्ति, साधन , संपत्ति खूब मिला सम्मान ,
अभिमान को त्याग कर, दे गरीबों को दान।

कामनाऐं मन में उठे, मन में कर तू लीन,
यथार्थ सुख की कामना क्यों चाहता मतिहीन।

बुराई से बुराई मिले , रहे निंदा में रत,
दुष्ट दुरात्मा दूर रख , विद्वानों का मत।

काम भावना सता रही, करले अपना विवाह,
पाप संकट से बचेगा, मिले जीने की चाह ।

चख कर प्रेम स्वाद को, हुये भक्ति में लीन,
लोक परलोक की शांति, सेवा में तल्लीन !

अपनी धरती

अपनी धरती अपना अंबर
हम इसके रखवाले
आजादी की सालगिरह पर
सौ-सौ सपने पाले।

ठहरे हम आजाद परिंदे
बांटें रोज उजाले
स्वर सरगम पर झूम उठें
मस्जिद और शिवाले।

साझा चूल्हा प्यार मोहब्बत
झूले प्रेम के बारे
साखी सबद रमैनी के रस
छकें खूब मतवाले।

हम बिस्मिल आजाद भगत के
बांचें रोज रिसाले
दीप से दीप जलाने के दिन
रौशन ख्याल निराले।

रिश्तों की धरोहर

होते हैं
माटी के खिलौने भी
अटूट रिश्तों के वारिस
जो टूटने के बावजूद
बने रहते हैं अटूट।

अगर जानना हो
खिलौनों से रिश्तों का राज़
तो फिर कागद के कोरे पन्नों पर
परिंदों की तरह
फुदकते नन्हों से पूछिए

जो बगैर कुछ बोले
आंखों की भाषा में
कह डालते हैं सब कुछ

जो कभी कभी
हो जाते हैं उदास
टूटे खिलौनों को
सीने से चिपकाए

बच्चे हमेशा
बचाए रखना चाहते हैं
रिश्तों की धरोहर।

है शिकायत

आजकल अपने
पुराने घाव गहरे हो गये हैं
कौन सुनता है यहां
सब लोग बहरे हो गये हैं।

हो गयीं बहरी दिशाएं
हर जगह प्रहरी लुटेरे हो गये हैं
आदमी की खाल ओढ़े भेड़िए
वक्त तो उनके सुनहरे हो गये हैं।

पुतलियों में रोशनी
किसको पता
सब ?धेरे के यहां पर हो गये हैं।

क्या मुनासिब है
यहां किसको पता
भेड़ियों की पांत के सब हो गये हैं।

हर जुबां खामोश तालेबंद सी
है शिकायत
लोग गूंगे हो गये हैं।

कौन सहलाये
यहां पर घाव किसका
हर किसी के हाथ लूले हो गये हैं।

करियर को लेकर अक्सर पूछे जाने वाले सवाल

क्या मुझे उन विषयों का चयन करना चाहिए जिनमें मैंने बेहतर स्कोर किया है या मुझे जिस विषय से प्यार है, उसके लिए जाना चाहिए?

जहाँ आपने अच्छा स्कोर किया है उन विषयों से संबधित धारा को चुनना आसान है। लेकिन फिर अगर आपको उस विषय में ज्यादा रुचि नहीं है तो आप कॉलेज में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकते हैं और अंततः अपने सपनों के करियर में हार सकते हैं। इसके लिए विषय के प्रति प्यार होना बेहद जरूरी है क्योंकि इससे आपको चुनौतियों को स्वीकार करने में मदद मिलेगी। आप यदि अपने विषय से प्यार करेगें तो आप उसमें और बेहतर तरीके से आगे बढ़ सकेगें।

मैंने अपनी कक्षा 12 में कम स्कोर किया है और मैं विज्ञान को आगे नहीं बढ़ा सकता हूं? मुझे क्या करना चाहिए?

जो बीत गया सो बीत गया। बस अपने अतीत को छोड़कर आगे बढ़ें। मानविकी और वाणिज्य धारा में भी कई विकल्प हैं। 12 वीं कक्षा के स्कोर के साथ जीवन समाप्त नहीं होता है आप अपने विषयों को बदल भी सकते हैं।

क्या ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रभावी और मूल्यवान हैं?

हां, ऑनलाइन पाठ्यक्रम अच्छे हैं जो आपके फिर से शुरू करने में मदद करता है। लेकिन आपको सावधान रहना चाहिए कि ये पाठ्यक्रम प्रमाणित हैं और हर जगह स्वीकार किए जाते हैं। जो आप पढ़ रहे हैं वो सही जगह पर प्रदर्शित हों। कई बार गलत जानकारी आपका करियर खराब कर सकती है।

मैंने 12 वीं कक्षा में कॉमर्स की पढ़ाई की है। क्या मैं धारा बदल सकता हूं?

हाँ, आप धाराएँ बदल सकते हैं लेकिन आप विज्ञान पाठ्यक्रमों का विकल्प नहीं चुन सकते। हां आप समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, अंग्रेजी, जनसंपर्क आदि विषयों का अध्ययन कर सकते हैं।

क्या कॉलेजों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा देना महत्वपूर्ण है?

हां और नहीं भी। कुछ कॉलेज अंग्रेजी और मास कम्युनिकेशन, बीबीए आदि जैसे पेशेवर विषयों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा आयोजित करते हैं। जबकि कुछ कॉलेज केवल आपके अंकों के आधार पर प्रवेश आपको देते हैं।

क्या मुझे एक अच्छे और प्रतिष्ठित कॉलेज का विकल्प चुनना चाहिए या मुझे अपने विषय को प्राथमिकता देनी चाहिए?

एक प्रतिष्ठित कॉलेज में अध्ययन करना निश्चित रूप से अच्छा होता है, लेकिन आपका विषय आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए क्योंकि यही आपके करियर में मदद करेगा इसलिए कॉलेज के साथ आप अपने विषय को भी अवश्य देखें।

मुझे भाषाएं पसंद हैं और मैं विदेशी भाषा में करियर बनाना चाहता हूं। स्कोप क्या है?

हर जगह एक विदेशी भाषा विशेषज्ञ की बहुत मांग है। अपने चरम पर पर्यटन और आतिथ्य उद्योग के साथ, एक विदेशी भाषा विशेषज्ञ न केवल एक अच्छा अनुवादक हो सकता है, बल्कि ऑनलाइन सामग्री भी तैयार कर सकता है। बीपीओ और मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन कंपनियों को भी विदेशी भाषा कौशल वाले लोगों की आवश्यकता होती है। इसलिए आप इस क्षेत्र में संभावनाएं तलाश सकते हैं

बीबीए के बाद मैं क्या कर सकता हूं?

बीबीए के बाद आप मार्केटिंग, फाइनेंस, रिटेल या आईटी में विशेषज्ञता के साथ एमबीए का कोर्स कर सकते हैं। हालांकि कई लोग बीबीए के बाद काम करना पसंद करते हैं, लेकिन एमबीए की पढ़ाई करना बेहतर होगा।

क्या दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम को मददगार है?

हां, आप दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम को आगे बढ़ा सकते हैं और साथ ही साथ डिजाइनिंग, आईटी और मीडिया जैसे पाठ्यक्रमों में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। आपको न केवल बैंक में काम करने के लिए आपके पास एक डिग्री होगी बल्कि एक पेशेवर योग्यता भी होगी।

विदेश में अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण परीक्षण क्या हैं?

विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए कई प्रवेश परीक्षा जैसे SAT, TOEFL और अन्य आयोजित की जाती हैं। विदेश में हमारे अध्ययन से आपको प्रभावी मार्गदर्शन मिलेगा।

एमबीए के बाद मुझे क्या नौकरी मिलेंगी?

एमबीए के बाद सफल करियर स्थापित करने के लिए पहली महत्वपूर्ण बात है स्पष्ट लक्ष्य को ध्यान में रखना। आपका लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। एमबीए के बाद कुछ नौकरियों जैसे बैंकिंग और वित्त, वाणिज्यिक बैंकिंग, देयता उत्पाद प्रबंधन, कार्ड प्रबंधन, लेनदेन बैंकिंग, कॉर्पोरेट बैंकिंग, सूचना प्रणाली प्रबंधक, निवेश बैंकिंग, प्रबंधन सलाहकार, डेटा विश्लेषक, उद्यमी आदि शामिल हैं।

वाणिज्यिक पायलट का न्यूनतम वेतन क्या है?

विमानन उद्योग अपने कर्मचारियों को आकर्षक वेतन पैकेज प्रदान करता है। एक वाणिज्यिक पायलट का औसत वेतन कहीं 7 लाख से 9.5 लाख प्रति वर्ष होता है।

मैं विज्ञान पृष्ठभूमि का छात्र हूं। क्या मैं अंग्रेजी ऑनर्स का कर सकता हूं?

हां, आप विज्ञान वर्ग में अपनी कक्षा 12 कर चुके हैं, तो भी आप अंग्रेजी ऑनर्स कर सकते हैं।

मैंने अपनी कक्षा 12 को विज्ञान धारा में किया है लेकिन अंग्रेजी ऑनर्स को चुना है। मेरी स्नातक की डिग्री पूरी करने के बाद, मैं उलझन में हूं। मुझे आगे क्या करना चाहिए? क्या मेरे लिए एमबीए एक अच्छा विकल्प होगा?

इंग्लिश ऑनर्स करने के बाद एमबीए करना एक अच्छा विकल्प नहीं है। अन्य अच्छे विकल्प हैं जैसे लॉ में पोस्ट ग्रेजुएशन, जर्नलिज्म, लाइब्रेरी साइंस, साइकोलॉजी, पॉलिटिकल साइंस, सिविल सर्विस एग्जाम या बीएड आप कर सकते हैं।

घर में जरूर लगाएं ये एक पौधा, बरसने लगेगा पैसा

आज कल आपको अधिकतर घरों में मनी प्लांट लगा हुआ दिख जाएगा। जहां कुछ लोग मनी प्लांट को घर के इंडोर में लगाते हैं तो वहीं कुछ लोग इसे बाहर गार्डन में या फिर बालकनी में लगाना पसंद करते हैं। यूं तो घर को और खूबसूरत बनाने के लिए लोग मनी प्लांट्स का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि वास्तु दोष से बचने के लिए भी अपने घर में मनी प्लांट लगा सकते हैं? ऐसे में आइए वास्तु शास्त्र में आज आचार्य इंदु प्रकाश से जानिए मनी प्लांट के पौधे के बारे में।

घर में साज-सज्जा के लिए बहुत से पेड़ पौधे लगाए जाते हैं, लेकिन कुछ पेड़-पौधे साज-सज्जा के साथ-साथ घर में सुख-समृद्धि की दृष्टि से भी अच्छे होते हैं। ऐसा ही एक मनी प्लांट का पौधा भी है। अधिकतर घरों में आपने यह पौधा देखा होगा। लताओं वाला यह पौधा हरे रंग का होता है। घर में मनी प्लांट का पौधा लगाने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है। साथ ही घर में सुख-समृद्धि का आगमन होता है और धन की आवक बढ़ती है।

वास्तु के साथ-साथ इंटीरियर की दृष्टि से भी मनी प्लांट का पौधा काफी अच्छा होता है। मनी प्लांट से न सिर्फ धन की बढ़ोतरी होती है बल्कि रिश्तों में भी मधुरता आती है। इसे आप घर के अंदर या बाहर कहीं भी लगा सकते हैं। इसे आप चाहें तो गमले में लगा सकते हैं, नहीं तो बोतल में भी लगा सकते हैं। आप मनी प्लांट को घर के आग्नेय दिशा में लगा सकते हैं। इससे घर में पॉजिटिव एनर्जी आती है और नकारात्मकता दूर हो जाती है। साथ ही इस दिशा में मनी प्लांट लगाने से घर की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होता है और पैसों की कमी कभी नहीं होती।

लिविंग रूम में करें इन रंगों का इस्तेमाल, घर में आएंगी खुशियां ही खुशियां

बैठक कक्ष यानि लिविंग रूम एक ऐसा स्थान है जहां परिवार के लोग एक साथ एकजुट होकर कुछ समय बिताना पसंद करते हैं। ऐसे में इस रूम का वास्तु सकारात्मक होना बेहद जरूरी होता है। वहीं, परिवार के सदस्यों के बीच कोई मनमुटाव ना हो उनका जीवन में कोई परेशानी न आए, इसके लिए जरूरी है कि घर का लिविंग रूम वास्तु के अनुसार हो। साथ ही उसकी दीवारों का रंग, सजावट, फर्नीचर आदि का सही स्थान पर हो।

तो फिर देर किस बात कि, वास्तु शास्त्र में आज आचार्य इंदु प्रकाश से जानिए बैठक यानि की शयनकक्ष के रंग के बारे में। बैठक, जहां पर आराम से बैठकर हम दूसरों से बात कर सकें और चाय की चुसकियां ले सकें, बैठक कक्ष बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। क्योंकि, जब घर में कोई मेहमान या कोई आस-पड़ोस का आता है तो उसे बैठक या शयनकक्ष में ही बिठाया जाता है। इसलिए बैठक कक्ष (लिविंग रूम) में रंग का चयन करते समय अपने साथ-साथ दूसरों की पसंद या नापसंद का भी ख्याल रखना चाहिए।

बैठक में ऐसे रंग का प्रयोग करना चाहिए जो बैठक के इंटीरियर में चार चांद लगा दें। वास्तु के अनुसार, लिविंग रूम की दीवारों का रंग सफेद, गुलाबी, पीला, क्रीम, हल्का भूरा रंग या फिर हल्के नीले रंग का ही चुनाव करना चाहिए।

मैरी क्रिसमस- सांता क्लॉज की चिट्ठी, हम सबके नाम

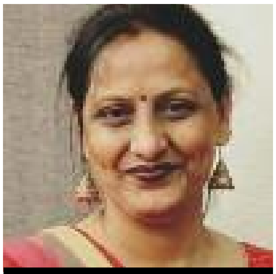

स्मृति आदित्य
वरिष्ठ पत्रकार, लेखक, चिंतक

हर साल मुझे आपके सुख-दुख के 60 लाख से ज्यादा पत्र मिलते हैं। इन पत्रों में खुशबू होती है आपके मीठे प्यार की। कभी आंसू की बरखा होती है, कभी तकलीफों का पिटारा, कभी चहकती खुशियां तो कभी गमगीन दुनिया। हर पत्र के साथ मैं रोता हूं, मुस्कुराता हूं और कभी-कभी घंटों बैठकर सोचता हूं। सोचता हूं, आखिर एक मानव इस दुनिया में चाहता क्या है? छोटी-छोटी मासूम खुशियां, सच्चा प्यार, अपनों की प्रगति, बड़ों का आशीर्वाद और भरपूर शांति। फिर क्यों आपकी इसी दुनिया में चारों तरफ नफरतों की जंग छिड़ी हुई है। क्यों हर साल बिना किसी गुनाह के सैकड़ों लोग मारे जाते हैं? आप सबके पत्र मुझसे मांगते हैं अपने लिए जिंदगी भर की दुआएं और आज मैं आपसे मांगता हूं पल भर का सुकून। आप सब चाहते हैं आपकी जिंदगी में रौनक रहे, रोशनी रहे और मैं इस क्रिसमस पर आपसे चाहता हूं इस धरती पर शांति का श्वेत उजाला बना रहे।

मैं आपको इस क्रिसमस पर देना चाहता हूं शांति के सफेद कबूतर लेकिन देखता हूं आपके हाथों में उन्हीं का लाल खून। तब तड़प उठती है मेरी आत्मा। इस बार जब आप क्रिसमस ट्री को सजाओं, तो मत भूलना अपने देश के उन नन्हे नौनिहालों को जिनके तन पर जरूरत के कपड़े भी नहीं सजे हैं। जब बनाओं क्रिसमस ड्रायफ्रूट्स केक, तो मत भूलना भूख से बेहाल उन बच्चों को जिन्हें सूखी रोटी भी नसीब नहीं। और जब क्रिसमस पार्टी में सांता यानी मेरा रूप धारण कर झूमों, तो मत भूलना कि खुशियों का पैगाम लाने वाला आपका अपना सांता खुश नहीं है गंदगी में जीवन बिताने वाले हजारों बाल मजदूरों का रूप देखकर।

मैं आपका अपना सांता आज पत्र लिख रहा हूं उन सारे जिम्मेदार और जहीन लोगों के नाम जो मुझसे अब तक सिर्फ और सिर्फ अपने लिए ही उपहार मांगते रहे हैं आज मैं उनसे उपहार चाहता हूं। चाहता हूं कि देखें अपने आसपास के गरीब, बेबस, शारीरिक रूप से अक्षम, अनाथ, मजदूर और मजबूर इंसानों को। और मनाएं क्रिसमस का पावन पर्व उनको एक पल की खुशी का उपहार देकर। यह ना कर सकें तो इतना तो कर ही सकते हैं कि इस बार खुद को खूबसूरत भावनाओं का उपहार दें कि हम हमेशा बस खुश रहेंगे और खुशियां देंगे। कभी दूसरों का बुरा नहीं चाहेंगे, कभी हिंसा और अहंकार के रास्ते पर नहीं चलेंगे। जब आप खुद ही नेक रास्तों पर चल पड़ेंगे तो स्वयं ही सांता बन जाएंगे। आपके 60 लाख पत्रों में 40 लाख पत्र नन्ही लेखनी से रचे हुए होते हैं। उन पत्रों से छलछलाती मीठी और मासूम आकांक्षाएं पढ़कर मैं पसीज उठता हूं। ये पत्र चाहते हैं उनके माता-पिता कभी अलग ना हों। चाहते हैं, दादा-दादी का साथ बना रहे।

दोस्तों को फीस ना भरने के कारण स्कूल ना छोड़ना पड़े। चाहते हैं दुनिया के सारे चोर सुधर जाए। कभी उनकी इच्छा होती है कि सड़क किनारे बैठें गरीबों पर मैं पैसे की बरसात कर दूं।

यहां तक कि वे चाहते हैं दुनिया के सारे हथियार समुद्र में बहा दिए जाएं और सीमा पर तैनात सारे जवान घर लौट आए। इतने और ऐसे-ऐसे भावुक अनुरोध कि अगर दिल की गहराई से समझे तो एहसास होगा कि मूल रूप से इंसान की कृति कितनी भोली और निश्छल होती है। ना जाने कब, कैसे, कौन सी विकृति उसे डस लेती है कि वह इंसान से हैवान बन जाता है। आप सच्चे मानव बने रहे और मानवता को बना रहने दें यही मेरी इस क्रिसमस पर सच्ची शुभकामनाएं हैं।

और आप इस क्रिसमस पर दीजिए मुझे बस एक उपहार, धरती पर बना रहे आपस में प्यार। मैरी क्रिसमस-हैप्पी क्रिसमस!

फैंस के सामने किसी की न चली, हेरा फेरी 3 में अक्षय की वापसी

अक्षय कुमार की हेरा फेरी हिंदी सिनेमा की सबसे पसंदीदा फ्रेंचाइजी में से एक है। राजू, श्याम और बाबूराव के तीन किरदार न केवल सबसे फेमस हैं बल्कि अक्षय कुमार, सुनील शेट्टी और परेश रावल की तिकड़ी ने लाखों फैंस के दिलों में खास जगह भी बनाई है। पिछले दो महीनों में हेरा फेरी 3 कई कारणों से चर्चा में रहा है, खासकर कॉमिक रोल की कास्टिंग। अक्षय कुमार के बाहर निकलने के बाद, यह पुष्टि की गई कि कार्तिक आर्यन फ्रेंचाइजी में कदम रखेंगे। खिलाड़ी ने खुद एक कार्यक्रम में पुष्टि की कि वह अब हेरा फेरी 3 नहीं करेंगे। बाद में, सुनील शेट्टी और परेश रावल ने फिल्म में कार्तिक आर्यन की भागीदारी की पुष्टि की।

हेरा फेरी 3 में अक्षय कुमार

अक्षय के फिल्म हेरा फेरी 3से बाहर निकलने की बात ने सोशल मीडिया पर हंगामा खड़ा कर दिया। फ्रेंचाइजी के फैंस और सिनेमा प्रेमियों ने अक्षय कुमार के बिना हेरा फेरी के साथ अपनी निराशा जताने के लिए एक अभियान #NoAkshayNoHeraPheri शुरू किया। फ़िरोज़ नाडियाडवाला और नया हेरा फेरी टीम अनीस बज़्मी और राज शांडिल्य सहित कई निर्देशकों के साथ बातचीत कर रहे थे लेकिन स्क्रिप्ट के मोर्चे पर वास्तव में कुछ भी काम नहीं आया।

फैंस की मांग पर अक्षय की वापसी

पिंकविला की रिपोर्ट के अनुसार, सार्वजनिक मांग पर फिरोज नाडियाडवाला ने हेरा फेरी फ्रेंचाइजी में राजू के रूप में वापसी के लिए अक्षय कुमार के साथ बातचीत फिर से शुरू की है। विकास के करीबी एक सूत्र ने कहा, जबकि कार्तिक आर्यन के साथ हेरा फेरी 3 की कास्टिंग के संबंध में सबकुछ हो चुका था, लेकिन अब फिर से सब बदल रहा है। पिछले 10 दिनों में फ़िरोज़ ने अक्षय कुमार से कई बार मुलाकात की है ताकि सभी मतभेदों को सुलझाया जा सके और उन्हें पसंदीदा फ्रेंचाइजी में वापस लाया जा सके। उन्हें पता चलता है कि रोल बहुत फेमस है और उन्होंने ये भी माना है कि इस कैरेक्टर को नई ऊंचाइयों पर ले जाने का श्रेय अक्षय को जाता है।

नो अक्षय, नो हेरा फेरी

सूत्र ने आगे बताया, हेरा फेरी अक्षय कुमार के बिना नहीं बन सकती। लीड ए॰ र्स के साथ हिंदी सिनेमा की सबसे फेमस कॉमिक फ्रैंचाइज़ी को वापस लाने का विचार है और इस समय चर्चाएं चल रही हैं। अक्षय ने भी न केवल एक एक्टर के रूप में बल्कि हेरा फेरी 3 को एक बड़ी फिल्म बनाने के लिए फिरोज के साथ सहयोग करने में रुचि दिखाई है। अक्षय के हेरा फेरी नहीं करने का कारण पैसा नहीं था, बल्कि स्क्रिप्ट थी। वह जानते हैं कि एक फ़्रैंचाइज़ी कितनी बड़ी है और वह केवल ब्रांड नाम को भुनाने के लिए चीजों को हल्के में नहीं लेना चाहते। लेकिन अब, वह और फिरोज बैठकर हेरा फेरी 3 के सभी पहलुओं पर फैसला करेंगे। अगर सब कुछ ठीक रहा, तो हेरा फेरी 3 में अक्षय राजू के रूप में वापस आ सकते हैं।

तीनों की केमेस्ट्री है लाजवाब

आगे बताया गया, हेरा फेरी और फिर हेरा फेरी हिंदी सिनेमा के दो सबसे प्रतिष्ठित फ्रेंचाइजी हैं, जिनमें अक्षय कुमार, सुनील शेट्टी और परेश रावल की केमिस्ट्री सबसे अलग है। कास्टिंग के इर्द-गिर्द हेरा फेरी के बाद, ऐसा लगता है कि अक्षय कुमार को फिर से राजू का रोल मिलेगा। हेरा फेरी में अक्षय के कैरेक्टर के साथ उनके शेयर किए गए बंधन के संबंध में पिछले कुछ हफ्तों में दुनिया भर से फैंस के प्यार के साथ हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

अपने फिगर के साथ साथ ब्यूटी पर भी दें विशेष ध्यान

यदि आप बढते हुए वजन कम करने की ठान चुकी है तो ऐसे में अपने फिगर के साथ-साथ ब्यूटी पर भी विशेष ध्यान दें 7 ऐसा करने से आगे चलकर आपको कोई परेशानी नही होगी। जी हां, ये सच है कि यदि मोटी महिलाएं अगर छरहरी होने की ठान लें, तो उनके इस संकल्प के आड़े कोई नहीं आ सकता। मोटापे से नाता टूटे, उससे पहले ब्यूटी से अपना रिश्ता जोड़ें। वजन चाहे व्यायाम, डाइटिंग या किसी सर्जरी की सहायता से कम करें, हर सूरत में त्वचा प्रभावित होगी। वजन कम करने की इस पूरी प्रक्रिया में कई बार त्वचा इतनी लटक जाती है कि कसावट की स्थिति में लाने में काफी समय लगता है। त्वचा का लटकना आगे चलकर ठीक हो पाएगा कि नहीं यह महिला की उम्र, वह कितने लंबे समय तक मोटी रही और उसने कितनी मात्रा में वजन कम किया जैसी बातों पर भी खासतौर से निर्भर करता है।

त्वचा की कोशिकाओं में प्रोटीन और प्रोटीन और फैट 2 तरह के मेट्रो एलिमेंट होते हैं, जिसे लाइपोप्रोटीन कहा जाता है। इससे त्वचा में लचक बनती है। जो महिलाएं वजन कंट्रोल की प्लानिंग कर रही है, वे अपनी कोशिकाओं में मौजूद फैट को नियंत्रित कर लेती हैं और पतली हो जाती हैं। लेकिन इससे शरीर में फैट और प्रोटीन का संतुलन बिगड़ जाता है। त्वचा की लचक कम हो जाती है, त्वचा में जल्दी झुर्रियां पड़ जाती हैं, त्वचा में जल्दी झुर्रियां पड़ जाती हैं। और त्वचा ढीली हो जाती है। इसलिए डॉक्टर बताते हैं कि जब भी वजन कम करें, तो अपनी डाइट पर पूरा ध्यान रखें। खाने में प्रोटीन कम न करें, लेकिन फैट और कार्बोहाइड्रेट पर नियंत्रण रख सकती हैं। किडनी में समस्या है, शरीर में यूरिक एसिड ज्यादा बन रहा है, तो उसे डॉक्टरी सलाह पर प्रोटीन की मात्रा कम लेनी चाहिए। वजन कम करनेवाली रही महिलाएं कुछ बातों पर गौर करें-

शरीर से चर्बी घटेगी, तो सबसे पहले गाल पिचकेंगे।

वक्ष, कूल्हे, बांहों और जांघों की त्वचा पर सफेद धारियां पड़ने लगेंगी और मांसपेशियां ढीली दिखने लगेंगी।

आंखों के आसपास की त्वचा पर झुर्रियां व काले घेरों की परेशानी होगी। इतना ही नहीं आंखों की रोशनी पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।

हाथों व पैरों का गुदगुदापन कम हो जाएगा और उंगलियां सिकुड़ी-सी दिखाई देंगी।

सिर के बाल तेजी से झड़ेंगे।

त्वचा चमकहीन दिखाई देगी।

आंखों की देखभाल

सूर्योदय से पहले रोज सुबह उठकर अपने मुंह में ढेर सारा पानी भर कर बंद आंखों पर 15-20 बार ठंडे पानी के छींटे मारें। इससे आंखों के आसपास पड़ने वाली झुर्रियां कम होंगी या देरी से पड़ेंगी।

कभी भी देर तक व्यायाम करने के बाद या गर्मी में बाहर से आने के बाद तुरंत ठंडे पानी से चेहरा और आंखें न धोएं। जब शरीर का पसीना सूखे, तब चेहरे व आंखों पर ठंडे पानी का इस्तेमाल करें।

दूर की किसी चीज को देर तक न देखें। पलकें तनाव में रहेंगी और झुर्रियां जल्दी पड़ेगी। पलके झपकाएं, आंखों को आराम मिलेगा। तेज धूप में सनग्लास का इस्तेमाल करें। कम रोशनी में पड़ने-लिखने का काम न करें। इससे आंखों थकी और सुस्त दिखाई देंगी। वजन कम करने से आंखों के नीचे काले घेरों की शिकायत भी आम है, इसके लिए रात को सोने से पहले अंडर आई जैल का इस्तेमाल करें। आलू का रस या खीरे के स्लाइस 15 मिनट तक आंखों पर लगाकर रखेंगी तो भी लाभ मिलेगा। आंखों की सूजन से बचने के लिए टी बैग्स, गुलाबजल में डूबे रुई के फाहे भी इस्तेमाल कर सकती हैं।

गाल व गरदन की कसावट

वजन कम होने का प्रभाव चेहरे पर पड़ता है। गालों और गरदन की कसावट बनी रहे इसके लिए 15 दिन के अंतराल पर फेशियल कराएं।

घर पर त्वचा के प्रकार के अनुसार पैक का प्रयोग कर सकती हैं। रूखी त्वचा वाली मोटी महिलाएं बादाम, दही और दूध से बने पैक का इस्तेमाल करें। सामान्य त्वचा वाली महिलाएं नीम व चंदनयुक्त फेस पैक इस्तेमाल कर सकती हैं।

हफ्ते में एक बार सरदियों के मौसम में ऑलिव ऑइल से गरदन से ऊपर की ओर ठोड़ी से कनपटी की ओर उंगलियों के ऊपर स्ट्रोक्स से चेहरे की मालिश करें। गर्मियों में तिल के तेल और बर्फ के पानी को बराबर मात्रा में मिलाकर मालिश करें।

बदन और झुर्रियां

बदन से चरबी छंटते ही झुर्रियों से बचने के लिए कंडीशनर का प्रयोग करें। एक बड़ा चम्मच शहद और 2 बड़े चम्मच क्रीम को मिलाकर 20 मिनट के लिए चेहरे या बदन पर लगाकर धो लें।

कोलेस्ट्रॉल कम कर खून को साफ और नसों को मजबूत बनाती हैं ये सब्जियां

वर्तमान में अनहेल्दी डाइट और उच्च कोलेस्ट्रॉल युक्त भोजन का सेवन लोगों में बीमारी की प्रमुख वजह है। डॉक्टर्स तथा हेल्थ एक्सपर्ट्स लोगों को अपने खाने में तेल से बने खाद्य पदार्थों, अनहेल्दी फैट, नमक और शुगर के सेवन को कम करने की सलाह देते हैं। इनके अलावा खाने में फाइबर, विटामिन, मिनरल्स और हेल्दी फैट वाली चीजों को ज्यादा शामिल करने की सिफारिस करते हैं। रिसर्च से पता चला है कि सब्जियों के नियमित सेवन से शरीर में जमा खराब अर्थात बैड कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद मिल सकती है। इस लेख में कोलेस्ट्रॉल को कम करने वाली कुछ ऐसी ही सब्जियों के बारे में बताया गया है जो शरीर में जमा कोलेस्ट्रॉल को बारह निकाकर खून की नसों को सा? तथा मजबूत बनाने में मदद कर सकती हैं। आइये जानते हैं कोलेस्ट्रॉल को कम करने वाली सब्जियां कौन कौन सी हैं?

कोलेस्ट्रॉल क्या होता है

कोलेस्ट्रॉल लिपिड का एक प्रकार है जो मोम जैसा पदार्थ होता है, यह रक्त-वाहिकाओं में पाया जाता है। कोलेस्ट्रॉल मुख्य रूप से दो तरह का होता है 'अच्छा' कोलेस्ट्रॉल और 'खराब' कोलेस्ट्रॉल।

अच्छा कोलेस्ट्रॉल या गुड कोलेस्ट्रॉल, उच्च घनत्व वाले लिपोप्रोटीन होते हैं जो शरीर के बेहतर कामकाज के लिए जरूरी है जबकि खराब कोलेस्ट्रॉल या बुरे कोलेस्ट्रॉल को निम्न घनत्व लिपोप्रोटीन या एलडीएल कहा जाता है जो आपको बीमार बना सकता है। मानव शरीर में खराब कोलेस्ट्रॉल का लेवल बढ़ने से दिल की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

शरीर से खराब कोलेस्ट्रॉल को कम करने और इसे शरीर में प्रवेश करने से रोकने के लिए हेल्दी डाइट का सेवन करना बहुत जरूरी होता है। इसके लिए आपको तेल से बने खाद्य पदार्थों, अनहेल्दी फैट, और शुगर का सेवन कम करना होगा, तथा खाने में फाइबर, विटामिन, मिनरल्स और हेल्दी फैट वाली चीजों के सेवन पर अधिक जोर देना होगा।

कोलेस्ट्रॉल कम करने वाली सब्जियां- शरीर में जमा गंदे कोलेस्ट्रॉल को कम करने के लिए आप नियमित सब्जियों का सेवन कर सकते हैं। यहाँ हम आपको कुछ ऐसी सब्जियों के बारे में बता रहे हैं, जिनका सेवन प्राकृतिक रूप से आपके खून से खराब कोलेस्ट्रॉल को कम करने और ब्लड वेसल को स्वस्थ और मजबूत बनाने में मदद कर सकता है। आइये जानते हैं शरीर से कोलेस्ट्रॉल कम करने वाली सब्जियों के बारे में.

बीन्स - बीन्स में घुलनशील फाइबर की भरपूर मात्रा पाई जाती है। चूँकि फाइबर को पचाने में शरीर को थोड़ा अधिक समय लगता है, जिसका मतलब है इसका सेवन आपको अधिक समय तक पेट भरा हुआ महसूस कराएगा। यही कारण है कि वजन कम करने वाले व्यक्तियों के लिए बीन्स का सेवन एक बेहतर विकल्प है। इसके अलावा बीन्स एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन और मिनरल्स का भी बेहतर स्रोत होती हैं, जो बैड कोलेस्ट्रॉल को कम करने और रक्त वाहिकाओं को मजबूत बनाने में मदद करती हैं।

बैंगन- एंटीऑक्सीडेंट का बेहतर स्रोत होने के कारण बैंगन को कोलेस्ट्रॉल लेवल तथा हृदय रोग के जोखिम को कम करने वाली सब्जियों में शामिल किया जाता है। कुछ अध्ययनों से पता चला है कि हृदय रोग के उच्च जोखिम वाले व्यक्तियों द्वारा नियमित बैंगन के जूस का सेवन करने से हाई कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद मिली थी।

भिंडी- शरीर में कोलेस्ट्रॉल के लेवल को कम करने के लिए सब्जियों में भिंडी के सेवन पर अधिक जोर देना चाहिए। भिंडी में म्यूसिलेज नामक एक गाढ़ा जेल जैसा पदार्थ पाया जाता है, जो पाचन क्रिया के दौरान कोलेस्ट्रॉल को बांध सकोलेस्ट्रॉल कम करने का

लहसुन- आपके किचिन में उपस्थित लहसुन स्वास्थ्य गुणों से भरपूर औषधी है, आप इसका उपयोग सब्जी और कई तरह के व्यंजनों में कर सकते हैं। शोधकर्ताओं ने पाया है कि लहसुन का रक्त (सीरम) कोलेस्ट्रॉल सेवन लेवल को कंट्रोल करने में मदद कर सकता है। कोलेस्ट्रॉल को कम करने के साथ ही लहसुन का किसी भी तरह से नियमित सेवन रक्तचाप को भी कम करने में मदद करता है।

केल- केल एक ऐसी सब्जी है जिसमें फाइबर सहित कई अन्य पोषक तत्व भारी मात्रा में पाए जाते हैं। एक कप उबले हुए केल में 4.7 ग्राम तक फाइबर पाया जाता है। फाइबर युक्त सब्जियों तथा भोजन का सेवन, खून में वसा को कम करने और ब्लड प्रेशर नियंत्रित करने में मदद कर सकता है। अपने खाने में अधिक फाइबर युक्त केल सब्जी को शामिल करने से शरीर से बैड कोलेस्ट्रॉल को कम किया जा सकता है।

निष्कर्ष

यह लेख केवल कोलेस्ट्रॉल कम करने में सहायक सब्जियों की सामान्य जानकारी के बारे में है। इन सब्जियों का सेवन स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है लेकिन इनके सेवन से किसी भी तरह के इलाज की गारंटी नहीं दी जा सकती है। अधिक जानकारी के लिए अपने डॉक्टर से संपर्क करें।

क्रोध हमेशा धैर्य और साहस की कमी का परिचायक होता है

हमारा गुस्सा और क्रोध हमारे जीवन की सभी समस्याओं की वजह में से एक है

क्रोध से हमारे पूरे परिवार के मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता - एडवोकेट किशन भावनानी

आज के युग में हर व्यक्ति को जीवन के किसी न किसी पड़ाव में विपरीत परिस्थितियों का निर्माण होने के कारणों में कहीं ना कहीं एक कारण उसका गुस्सा या क्रोध भी होगा। अगर हम अत्यंत संवेदन शीलता और गहनता से उत्पन्न हुई उन परिस्थितियों की गहनता से जांच करेंगे तो हमें जरूर यह कारण महसूस होगा। गुस्से और क्रोध का वह छोटा सा पल ऐसी अनेकों विकराल स्थितियों और परिस्थितियों को पैदा कर देता है, जिसकी हमें उम्मीद भी नहीं रहती और फिर बड़े बुजुर्ग लोग कहते हैं ना कि, जब चिड़िया चुग गई खेत अब पछतावे का होए।बस हमें उस गुस्से क्रोध के उस पल को काबू में रखने के मंत्र सीखने होंगे जो कि आसान है। सबसे पहले तो हमारी यह सव प्रतिशत कोशिश होनी चाहिए कि उस स्थिति को पैदा ही ना होने दें , जिसके कारण क्रोध या गुस्सा या आक्रोश उत्पन्न हो।परंतु यह भी उचित बात है कि, हम किसी भी परिस्थिति को कितना भी रोके, परंतु स्थिति उत्पन्न हो ही जाती है,या अन्य कोई यह स्थिति उत्पन्न कर ही देता है, तो ऐसी परिस्थिति में सबसे सरल मंत्र है उस परिस्थिति की हर बात,हर स्थिति को अत्यंत ही सहजता और सरलता से लें और गुस्से या क्रोध या आक्रोश को जगने से पहले ही तुरंत उसे समाप्त कर दें। उसके लिए सहजता व सरलता इन दो शब्दों या मंत्रों को गांठ बांध के रखना ही होगा।

साथियों जब शरीर क्रोध के आवेग में काबू हो जाता है तो मनुष्य विचार शून्य हो जाता हैं. उसे कुछ भी सूझता नहीं है जैसे मुह में आया बोल दिया अथवा जो हाथ में आया उसे चला दिया जाता हैं. ऐसे करने से बाद में पछताने के सिवाय कुछ भी हाथ नहीं लगता हैं। यदि आप क्रोध को नियंत्रित नहीं कर पाते है तो यह आपके स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक है, यह आपके ब्लड प्रेशर को अधिक करने के साथ ही कई व्याधियों को जन्म भी दे सकता हैं।क्रोध को कायरता की निशानी भी कहा जाता है, इसे स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक भी माना गया हैं. जिन्हें विभिन्न परिस्थितियों में धैर्य एवं साहस की कमी होती है वे क्रोधित होते हैं। यह संताप विकलता की दशा हैं. एक क्रुद्ध व्यक्ति के सोचने समझने और विचारने की शक्ति शून्य हो जाती हैं।

साथियों ,मेरा ऐसा निजी मानना है कि जितनी भी विपरीत, हानिकारक, कष्टदाई परिस्थितियां उत्पन्न होती है, उसका मूल कारण गुस्सा, आक्रोश, क्रोध में उठाया गया हिंसात्मक कदम होता है, जिसकी परिणीति में उन विपरीत परिस्थितियों का जन्म होता है।और अगर उन परिस्थितियों, स्थितियों को फलने फूलने के लिए, कथित प्रोत्साहन मिला तो फिर विकराल रूप बन इंसान को सबसे बड़ा और खतरनाक प्राणी बना देता है ,जिसे आज की स्थिति में अपराध के जगत का डॉन या कुख्यात अपराधी की संज्ञा दी जाती है।साथियों, हम अपने रूटीन जीवन के हर क्षण में काफी नजदीकी से देखते होंगे कि कोई भी टॉपिक में, किसी भी क्षेत्र में, किसी भी विषय में, बात तभी बिगड़ जाती है जब वहां तावबाज़ी अर्थात गुस्सा या क्रोध का जन्म होता है, और बात बढ़ कर कहासुनी, मारपीट, हत्या की कोशिश, हत्या, जख्मी, घायल इत्यादि से पुलिस, जेल , और मामला अदालतों की दहलीज तक जा पहुंचती है। और सामाजिक-आर्थिक नैतिक, हानि, मानहानि अलग होती है। साथियों सोचिए इतनी भारी कीमत चुकानी होती है, मात्र एक छोटे से पल की जिस पर आसानी से नियंत्रण किया जा सकता था। जो भी व्यक्ति उपरोक्त विपरीत प्रक्रिया, गुस्से, क्रोध, से जेल तक में बंदी बनाया जाता है या सजा काटता है या अदालतों के चक्कर काटता है, विशेषज्ञों और अधिवक्ताओं के पीछे घूमता है, अगर हम उसकी प्रतिक्रिया जानना चाहेंगे तो हमें निर्णय करने में आसानी होगी कि मामला गुस्से और क्रोध की परिणीति का है और कहीं ना कहीं उस व्यक्ति के मन में गुस्से और क्रोध के प्रति पछतावे की बात सामने आती है। गुस्सा और क्रोध से, बदले की भावना का उदय होता है और फिर बदले पर बदला के चक्रव्यूह में अनेक जीवो का जीवन कुचक्र में फंस कर खराब हो जाता है। क्योंकि फिर बदले का अंजाम बहुत दूर तलक जाता है, जो गुटबाजी, गैंगवार सहित बात दूर तलक चली जाती है।

साथियों अगर हम अपने क्रोध, गुस्से को काबू में कर पाएंगे तो सहजता और सरलता रूपी मिठास का अपने आप उदय होगा हम स्वाभाविक रूप से मीठा बोलेंगे। हमारी वाणी में मिठास उत्पन्न होगी। चार लोग हमारे करीब आएंगे,और हमारी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी, मान सम्मान होगा। जिसका प्रभाव हमारी वर्तमान पीढ़ी, भावी पीढ़ी पर भी पड़ेगा क्योंकि बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि, बोया बीज बबूल का तो आम कहां से खाए, और बोया बीज मिठास का तो कुल पुरा मीठा होय। हम सामाजिक रुप में भी किसी व्यक्ति या परिवार को उसके कुल से ही कतारते हैं कि, अच्छे कुनबे का परिवार है या अच्छे कुनबे का व्यक्ति है।

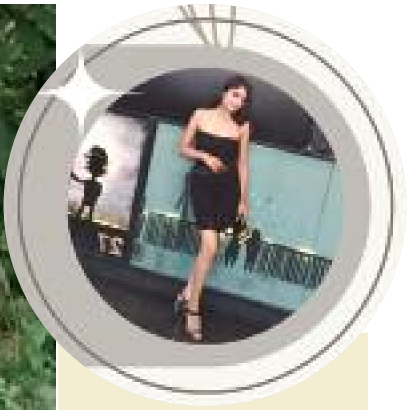

"The future belongs to those who believe in the beauty of their dreams "
My name is Tanu Yadav, I am pursuing BA (honours) Economics and currently working as a RJ at BSSS rhythm international online radio platform i have keen interest in fashion designing and would like to dedicate my energy into this passion.Particip ated in fashion ramp walks.Contact no. 7828947600 Email Id- jaya1yadav222@ gmail.com

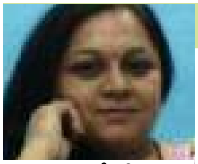

आचार्य मीता
एस्ट्रो, टेरो रीडर
मो. 9424577166

मेष- दिसंबर का महीना बेहद शुभ साबित होगा। माह की शुरुआत से ही आपको अपने कार्य में मनचाहे फल की प्राप्ति होनी प्रारंभ हो जाएगी। आपके मान-सम्मान और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धनलाभ के योग बनेंगे। इस दौरान आप अपनी बुद्धि,विवेक और वाणी से सभी कार्यों को सिद्ध करने में कामयाब रहेंगे। पेशेवर रूप से यह समय कमीशन, कांट्रैक्ट पर काम करने वाले और सलाहकारों के लिए बेहद शुभ रहेगा। इस दौरान करिअर और कारोबार को आगे बढ़ाने के कई मौके मिलेंगे। बेरोजगार लोगों को रोजी-रोजगार की प्राप्ति होगी।

वृषभ- साल का आखिरी महीना मिलाजुला रहने वाला है। इस महीने आपको अपने धन, सेहत और समय का खूब प्रबंधन करके चलना होगा। माह की शुरुआत में आपको मौसमी बीमारी या फिर किसी पुरानी बीमारी के उभरने से शारीरिक-मानसिक कष्ट मिल सकता है। सेहत अच्छी नहीं रहने पर आपके कामकाज भी प्रभावित हो सकते हैं।

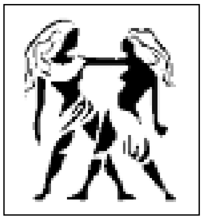

मिथुन- माह की शुरुआत में आपको घर और बाहर दोनों जगह सभी लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। बॉस की कृपा बरसेगी और पदोन्नति के योग बनेंगे। यह समय परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे लोगों के लिए भी बेहद शुभ साबित होगा। लंबे समय से मनचाहे जगह पर ट्रांस्फर की कामना पूरी होगी।

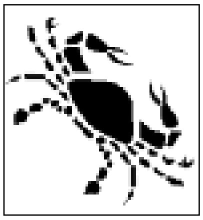

कर्क - कर्क राशि वालों के लिए साल का आखिरी महीना दिसंबर मिलेजुले फल प्रदान करेगा। हालांकि माह की शुरुआत में आपको अपने कार्यों में मनचाही सफलता प्राप्त होगी और इस दौरान किसी प्रभावी व्यक्ति की मदद से किसी बड़ी समस्या का समाधान निकल आने पर मन को सुकून मिलेगा। इस दौरान मित्रों और सगे-संबंधियों से भी पूरा सहयोग मिलेगा।

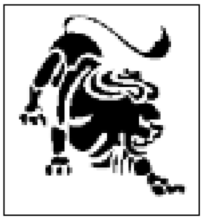

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिए दिसंबर का महीना शुभता और सौभाग्य को लिए है। माह के उत्तरार्ध के कुछ समय को यदि छोड़ दिया जाए तो पूरा महीने आपको परिश्रम और प्रयास करने पर शुभ फलों की प्राप्ति होगी। माह की शुरुआत में ही आपकी नौकरी में पदोन्नति के योग बन सकते हैं। मनचाहे स्थान पर स्थानान्तरण की कामना पूरी होगी। राजनीति से जुड़े लोगों को उच्च पद की प्राप्ति या फिर अहम जिम्मेदारी मिल सकती है।

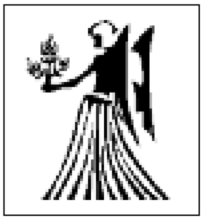

कन्या- कन्या राशि के लिए साल का आखिरी महीना मनचाही सफलता और सभी सपनों को पूरा करने वाला रहेगा। दिसंबर महीने में जहां आपका सौभाग्य पूरा साथ देगा वहीं आपको हंसी-खुशी पल बिताने के कई अवसर प्राप्त होंगे। माह की शुरुआत में ही आपको किसी धार्मिक या मांगलिक कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर प्राप्त होगा।

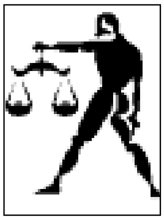

तुला- साल का आखिरी महीना गुडलक लिए हुए है। शुरुआत से ही आपको सौभाग्य का पूरा साथ मिलना प्रारंभ हो जाएगा। कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर के के साथ संबंध और भी मजबूत होंगे और उनकी मदद से सभी प्रोजेक्ट को समय पर पूरा करने में कामयाब होंगे। इस दौरान आपके पद और प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। नौकरीपेशा लोगों की आय के अतिरिक्त स्रोत बनेंगे। संचित धन में वृद्धि होगी। माह के दूसरे सप्ताह में आप अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर अपने सभी विरोधियों की षडयंत्र का पर्दाफाश करने और उन पर विजय पाने में कामयाब होंगे।

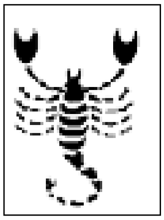

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिए दिसंबर का महीना मिलेजुले फल देने वाला साबित होगा। माह के उत्तरार्ध के मुकाबले पूर्वार्ध शुभता और सौभाग्य लिए है। ऐसे में इस दौरान नौकरीपेशा लोगों के अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण और वेतन वृद्धि के योग बनेंगे। कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर दोनों का पूरा सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में मनचाहे लाभ की प्राप्ति होगी। इस संबंध की गई छोटी-बड़ी यात्राएं सुखद एवं लाभप्रद साबित होंगी। जो लोग लंबे समय से अपना नया व्यवसाय शुरु करने की सोच रहे हैं, उनकी यह कामना दिसंबर महीने के पूर्वार्ध में पूरी हो सकती है।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिए साल का आखिरी महीना शुभता और सौभाग्य को लिए है। माह की शुरुआत में कामकाज के सिलसिले में छोटी या लंबी दूरी की यात्रा पर निकलना पड़ सकता है। यात्रा के दौरान आपकी कई प्रभावी लोगों से मुलाकात होगी, जिनकी मदद से लाभ की योजनाओं से जुड़ने या फिर लंबे समय से अटके काम को पूरा करने अवसर प्राप्त होगा। इस दौरान अविवाहित लोगों का विवाह तय हो सकता है।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिए साल का आखिरी महीना मिलेजुले फल देने वाला है। मकर राशि के जातकों को इस माह मनचाही सफलता पाने के लिए लोगों को मिलाजुला कर चलना होगा। यदि आप ऐसा करने में कामयाब रहते हैं तो आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे और आप अपने जीवन से जुड़ी सभी अड़चनों को आसानी से दूर करने में कामयाब हो जाएंगे। माह की शुरुआत में कार्यक्षेत्र में आपकी विरोधी आप पर हावी होने या फिर आपको आपके लक्ष्य से भटकाने की कोशिश कर सकते हैं।

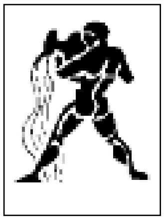

कुंभ- कुंभ राशि के जातकों की दिसंबर माह की शुरुआत शुभता और सौभाग्य लिए रहेगी। इस दौरान आपको पूर्व में की गई मेहनत और प्रयास के मनचाहे फल प्राप्त होंगे। सत्ता-सरकार के सहयोग से आपको धन लाभ की प्राप्ति होगी। नौकरीपेशा लोगों का मनचाही जगह पर तबादलाा हो सकता है। यदि आप रोजी-रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं तो आपकी यह कामना भी इस दौरान पूरी हो सकती है। माह के दूसरे सप्ताह में लंबे समय से चली आ रही किसी पारिवारिक समस्या का हल निकल आने पर आप राहत की सांस लेंगे। इस दौरान इष्ट-मित्रों के साथ पिकनिक पार्टी करने का अवसर प्राप्त होगा।

मीन- मीन राशि के जातकों के लिए साल का आखिरी महीना शुभता और सौभाग्य लिए है। महीने की शुरुआत से ही आपको अपने कार्यों में मनचाही सफलता मिलनी प्रारंभ हो जाएगी। खास बात यह कि पूरे महीने आपको कार्य विशेष या फिर कहें सपनों को साकार करने में सभी का पूरा सहयोग मिलता रहेगा। दिसंबर महीने की शुरुआत उन लोगों के लिए बेहद शुभ साबित होगी जो खुद का व्यवसाय या खुद को कोई काम करते हैं।

मलाइका अरोड़ा ने अटेंशन पाने की कोशिश से किया इनकार:बोलीं-

मैं ऐसा जान कर नहीं करती

बॉलीवुड एक्ट्रेस मलाइका अरोड़ा के टॉक शो मूविंग इन विद मलाइका के हालिया एपिसोड में उनके डिजाइनर दोस्त विक्रम फड़नीस शामिल हुए। मलाइका से बातचीत के दौरान विक्रम उनसे पूछते हैं कि क्या उनकी जिंदगी में ऐसा कुछ हुआ है, जिसका उन्हें सालों बाद पछतावा होगा। इसके साथ ही विक्रम ने कहा कि कुछ लोगों को लगता है कि मलाइका जो कुछ भी करती हैं, वो अटेंशन पाने के लिए करती हैं।

आपके बारे में बाहर काफी चर्चा है

विक्रम ने कहा, %आपके बारे में लोग काफी चर्चा करते हैं। जब आप बिल्डिंग से बाहर निकलती हो, जिस तरह से आप चलते हो, इस बारे में बाहर काफी गॉसिप होती है। जब आप किसी इवेंट में शामिल होती हैं, आपके आउटफिट के बारे में बाहर चर्चा होती है। लोगों को लगता है कि या तो आपको ये सब पसंद है, या तो आप इसे जान कर रही हैं, क्योंकि आप जानती हैं कि ये रिवलेंट है।%

मैं ऐसा जान कर नहीं कर रही हूं

मलाइका ने इसके जवाब में कहा, %मैं ऐसा जान कर नहीं कर रही हूं। मैं एक ऐसी इंसान हूं, जो कभी किसी का अटेंशन पाने के लिए कुछ करे, और आप इस बारे में सबसे अच्छे से जानते हो। मैंने ऐसा कभी नहीं किया है।% इसके आगे मलाइका कहती हैं कि क्या मुझे अपने बारे में गॉसिप कम करने के लिए मेकअप नहीं करना चाहिए। हालांकि विक्रम कहते ??हैं कि उनके अंदर पहले से काफी बदलाव आया है।
दरअसल लोग अक्सर मलाइका को उनके कप?ों और उनके चलने के तरीके की वजह से ट्रोल करते रहते हैं। वहीं सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि वो अटेंशन पाने के लिए ऐसा करती हैं।

छैंया-छैंया से रातों रात स्टार बन गई थीं

मलाइका एक्टर-प्रोड्यूसर के तौर पर इंडस्ट्री में काम कर चुकी हैं। उन्होंने 20 साल की उम्र में ही काम शुरू कर दिया था और फिल्म %दिल से% के सॉन्ग %छैंया-छैंया% से रातों रात स्टार बन गई थीं। उसके बाद उन्होंने कई डांस नंबर्स में काम किया जैसे %रंगिलो मारो ढोलना%, %मुन्नी बदनाम हुई%, आदि।

द आर्चीज की रैपअप पार्टी में ग्लैमरस सुहाना

बॉलीवुड की फिल्म निर्माता जोया अख्तर की अपकमिंग फिल्म %द आर्चीज% की शूटिंग पूरी हो गई है। इस फिल्म में खुशी कपूर, सुहाना खान और अगस्त्य नंदा जैसे स्टारकिड्स लीड रोल में नजर आने वाले हैं। इस मौके पर जोया अख्तर ने एक पार्टी रखी थी, जिसमें शाहरुख खान की ला?ली बेटी सुहाना खान ने खुशी कपूर के साथ शिरकत की जिसका एक वीडियो सामने आया है। सुहाना जहां रेड बॉडीकॉन ड्रेस में स्टनिंग लग रही थीं तो वहीं खुशी कपूर ब्लैक बैकलेस शॉर्ट ड्रेस में बेहद खूबसूरत दिखीं। इस दौरान दोनों ने साथ में पैपराजी को पोज भी दिए। पार्टी में एंट्री करते हुए सुहाना बेहद खुश नजर आ रही हैं। बता दें, साल 2023 में नेटफ्लिक्स पर द आर्चीज रिलीज होने वाली है, जिसमें एंग्लो-इंडियन समुदाय के दोस्तों के एक ग्रुप से जुड़ी स्टोरी देखने को मिलेगी।

दीपिका की भगवा बिकिनी का विरोध- 7600 साल पुरानी देवी की पेंटिंग में दिखी पहली बिकिनी

दीपिका पादुकोण फिल्म पठान के गाने बेशरम रंग में बिकिनी पहनकर विवाद में घिर गई हैं। उन पर भारतीय सभ्यता को खराब करने का आरोप लग रहा है। कारण है उनका गाने में ऑरेंज बिकिनी पहनना और इस पर गाने के बोल होना बेशरम रंग। दीपिका मॉडर्न बिकिनी पहनने वाली बॉलीवुड या दुनिया की पहली एक्ट्रेस नहीं हैं। दुनिया में बिकिनी का इतिहास 7600 साल पुराना है। साउथ अनाटोलिया (वेस्टर्न एशिया) की एक प्राचीन बस्ती में एक देवी की बिकिनी जैसे कपड़े पहने एक पेंटिंग मिली थी। भारतीय फिल्मों में बिकिनी पहनने वाली पहली एक्ट्रेस शर्मिला टैगोर थीं, वहीं दुनिया की बात करें तो मॉडर्न बिकिनी 5 जुलाई 1946 को ईजाद हुई।

ब्रांड प्रमोशन के लिए खुले कार में निकलीं अनुष्का

एक्ट्रेस अनुष्का शर्मा हाल ही में मुंबई के बांद्रा में एक खुले कार में स्पॉट हुईं। इस दौरान उन्हें देखने के लिए सड़क पर काफी भीड़ जमा हो गई जिसकी वजह से सड़क पर काफी लंबा जाम लग गया। दरअसल अनुष्का एक स्पोर्ट्स ब्रांड के प्रमोशन के सिलसिले में खुले कार में सवार होकर बांद्रा की सड़को पर निकली थीं। इस दौरान उन्होंने अपने फैंस को देख कर हाथ भी हिलाया ,लेकिन जब ये वीडियो इंटरनेट पर वायरल हुआ तो ट्रोलर्स ने अनुष्का को ट्रोल करना शुरू कर दिया। ट्रोलर्स का कहना है कि अनुष्का को ब्रांड प्रमोशन के लिए सड़क पर ट्रैफिक नहीं लगाना चाहिए था।

छुट्टियां बिताने लंदन पहुंची सारा अली

बॉलीवुड एक्ट्रेस सारा अली खान सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। फिलहाल सारा अपनी मां अमृता सिंह के साथ यूके में विंटर वेकेशन मना रही हैं। जिसके कुछ वीडियोज और फोटोज सारा ने अपने सोशल मीडिया पर शेयर किया है।

मां संग छुट्टियों पर निकलीं सारा

मंगलवार को इंस्टाग्राम स्टोरी पर सारा ने अमृता सिंह और हेयर स्टाइलिस्ट सैंकी एवरस के साथ दो तस्वीरें शेयर कीं। इन पि• र्स में सारा पिंक कलर की जैकेट और शूज के साथ पिंक जिम वियर में काफी प्यारी लग रही हैं। वहीं अमृता सिंह भी दिख रही हैं, उन्होंने लॉन्ग ब्लैक विंटर जैकेट पहनी हुई है। एक्ट्रेस ने अपने इंस्टा स्टोरी पर दूसरा पोस्ट किया है जिसमें वह स्विमिंग पूल में इंजॉय करती हुई नजर आईं। वीडियो में एक्ट्रेस रेड बिकिनी में पूल से बाहर आते हुए दिख रही हैं। इसके साथ ही एक्ट्रेस ने कैप्शन में लिखा- %खुशी, शांति और आराम।

इनके अलावा सारा ने सारा ने अर्ली सनसेट का एक वीडियो और अपने डिनर की एक तस्वीर भी शेयर की है। इस फोटो में टेबल पर कई डिशेज नजर आ रही हैं। और साथ ही फोटो के कैप्शन में लिखा, %इन मूड फॉर द फूड%।

सारा अली खान का वर्कफ्रंट

सारा को आखिरी बार पिछले साल धनुष और अक्षय कुमार स्टारर आनंद एल राय की 'अतरंगी रे' में देखा गया था। अगले साल उनकी चार फिल्में रिलीज होने वहीं है। आदित्य धर के निर्देशन में बनने वाली फिल्म %द इम्मॉर्टल अश्वत्थामा% में सारा विक्की कौशल के साथ नजर आने वाली हैं। ये फिल्म महाभारत के योद्धा अश्वत्थामा पर आधारित होगी। इस फिल्म के जरिए दोनों एक दूसरे के साथ पहली बार स्क्रीन पर दिखाई देंगे। इसके अलावा वह फिल्म 'गैसलाइट' में विक्रांत मैसी के साथ नजर आएंगी।

आर्गेनिक प्रोडक्ट :-

गेहुँ आटा, मल्टीग्रेन आटा, बाफला / बाटी आटा, बाजरा आटा ज्वार आटा, गेहुँ दलिया, तुअर दाल, मूंग दाल, बेसन, मक्का आटा आदि.....

Be Attention

- Ancestral taste
  पुराना स्वाद
  (दादा दादी के जमाने का)
  जब शुध्द खाया नही तो
  शुध्द जानोगे कैसे?
- Smart Women
- Smart Generation
- Buy Smart

Pride of Sehore (m.p.)

अपने शहर के Best Quality Product सम्पूर्ण भारत मे Amazon.in के द्वारा घर घर पहुंचाए जा रहे है | मध्यप्रदेश के साथ खास कर महाराष्ट्र गुजरात, तमिलनाडु, तेलागना, सिक्कीम, छतीसगड, केरल, उ.प्र., दिल्ली जैसे राज्यो मे विक्रय किये जा रहे हे.....

"Blue Sky Home Stay"

*O*ffers, a state of the art fully furnished 3 Bedroom apartment,

for an enjoyable and comfortable stay for the guests.

This apartment can be booked for long as well as short stays.

Do connect with us if you or your guest are planning for a stay in Bhopal.

You can book the apartment via airbnb.com or booking.com
For direct booking: Call / Whatsapp 9827318384